Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

बालस्स मंदयं बीयं, जं च कडं अवजाणई भुज्जो।

मूढ़ की यह दूसरी मंदता है कि वह किए हुए पाप को नकारता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 19 • 13 - 19 फरवरी 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 11-02-2023 • पेज : 12 • ₹ 10

आदमी बुराई, हिंसा और निष्ठुरता से बचने का प्रयास करे : आचार्यश्री महाश्रमण

जीवाणा, ५ फरवरी, २०२३

धीर, वीर, गंभीर आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ जालौर जिला के जीवाणा गाँव में पधारे। जीवाणा अनार की खेती के लिए प्रसिद्ध है। अमृत देशना प्रदान करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि हमारे पास भाषा की लब्धि है। बोलने की शक्ति का होना भी एक विकास की स्थिति है।

अनेक प्राणियों के पास बोलने की लब्धि प्राप्त नहीं है तो अनेक के पास बोलने की लब्धि भी है। हमारी इस दुनिया में आदमी एक विकसित प्राणी है। जो बोलता है, सोचता है, लिखता है। इस दृष्टि से दुनिया का सर्वश्रेष्ठ प्राणी आदमी है। मनुष्य की योनि ही ऐसी है, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। केवल ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

आदमी विकास कर सकता है तो पतन के गर्त में भी गिर सकता है। आदमी में हिंसा के भाव होते हैं, तो अहिंसा के भाव भी होते हैं। निष्ठुरता है तो दया के भाव भी हैं। असद् संस्कार आदमी में हैं तो सद्संस्कार भी मिलते हैं। आदमी बुराई, हिंसा, असद् संस्कार और निष्ठुरता से बचने का प्रयास करें। असद् से सद् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर इस मानव जीवन में बढ़ा जा सकता है।

अज्ञान का अंधकार कम हो, ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित हो। केवलज्ञान हो जाता है, तो फिर पूर्णतया प्रकाश होता है। ज्ञानी-ज्ञानी व्यक्ति मिले तो ज्ञान की चर्चा हो सकती है। ज्ञान की चर्चा करने से कुछ उपलब्धि हो सकती है। ज्ञान की चर्चा में अनाग्रह का भाव हो, दुराग्रह होने से सच्चाई की प्राप्ति में बाधा हो सकती है। शोध है, तो पूर्ण धारणा में चिंतन-मंथन से बदलाव किया जा सकता है। बाकी तो केवली जाने वही सत्य है। शोध से अच्छा तत्त्व प्राप्त हो सकता है।

जैन समाज में धार्मिक जागरणा रहे। गोविंदगढ़ से साध्वी प्रसन्नयशा जी आदि दो सतियाँ आई हैं। सतियों में भी विकास होता रहे।

साध्वी प्रसन्नयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। आदर्श विद्या मंदिर स्कूल के प्रधानाचार्य इंद्रसिंह, धीरज गोलेछा, उत्तमसिंह उपासक सोहनलाल कोठारी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया। उपासक सोहनलाल कोठारी (वासी-रीछेड़) ने मेरी जीवन यात्रा के बारे में 'बढ़ते कदम' पुस्तक पूज्यप्रवर को समर्पित की। पूज्यप्रवर ने आशीर्वाद फरमाया। सोहनलाल एवं धर्मपत्नी ने कुछ प्रत्याख्यान पूज्यप्रवर से ग्रहण किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन के हर कार्य में हो धर्म का समावेश : आचार्यश्री महाश्रमण

बावतरा, ६ फरवरी, २०२३

धर्मज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर बावतरा गाँव के राजकीय उ०मा० विद्यालय में पधारे। उपस्थित परिषद को मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए अध्यात्म विद्या के गुरु ने फरमाया कि आदमी के जीवन में धर्म का समावेश होना चाहिए। जीवन में हमें अनेक प्रवृत्तियाँ करनी होती हैं। प्रवृत्तियों के साथ धर्म को जोड़ने का प्रयास होना चाहिए।

जीवन में शांति-समता है तो कर्म भी धर्म प्रभावित हो सकता है। धर्म निरपेक्षता अच्छी बात है, पर जीवन व्यवहार में धर्म होना चाहिए। अनुशासन में रहना चाहिए। कर्तव्य निष्ठा और अनुशासन के बिना प्रजातंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो जाएगा।

विद्यार्थी स्वानुशाषी हो। निज पर शासन फिर अनुशासन। विद्यार्थियों को अनेक विद्याओं के साथ अध्यात्म विद्या, जीवन विज्ञान को भी सिखाया जाए। जीवन में मैत्री व आत्मानुशासन और नैतिकता-ईमानदारी के संस्कार भी मिले। प्राणियों की हिंसा मत करो। विद्यालय तो ज्ञान आदान-प्रदान का मंदिर है। जीवन में अच्छे गुणों के संस्कार हों।

(शेष पृष्ठ २ पर)

✦ ज्ञान प्राप्ति के लिए बहुश्रुत की उपासना करनी चाहिए और विवेकशील व्यक्तियों से मार्गदर्शन लेना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

धर्म के समाचरण से करें जीवनरूपी भवसागर को पार : आचार्यश्री महाश्रमण

जीवाणा, ४ फरवरी, २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि अध्यात्म के महासुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग ७ः३ किमी का विहार कर जीवाणा गाँव में पधारे। विश्वगुरु ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि नौका एक उपयोगी साधन है। हमारे जैन शास्त्र में भी कहा गया है कि साधु भी किसी स्थिति में नौका विहार कर सकता है। हमारे जैन शासन के चारित्रात्माओं ने नौका विहार किया भी है।

नौका पार लगाने वाली होती है। पर हर नौका पार लगा दे यह जरूरी नहीं है। योग्य नौका पार लगा सकती है। शास्त्र में एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात बताई कि यह शरीर नौका है। लकड़ी की नौका तो पानी से पार लगाने वाली है। शरीर रूपी नौका भवसागर से पार लगाने वाली हो सकती है। जीव नाविक है और यह संसार अरणव समुद्र है, भव सागर है। इससे महर्षि लोग तर जाते हैं।

शरीर एक ऐसा साधन है, जो धर्म का साधन बन सकता है, तो पाप का साधन भी बन सकता है। यह शरीर रूपी नौका पार लगाने वाली बन सकती है, तो डुबोने वाली भी बन सकती है। सछिद्र नौका डुबोने वाली एवं निसछिद्र नौका पार लगाने वाली होती है। आश्रव रूपी छिद्र जीवन में है तो इस नौका में कर्म रूपी पानी आ जाता है और वो डुबोने वाली नौका बन जाती है।

हमें तो पार लगाने वाली नौका चाहिए। आश्रवों रूपी छिद्रों को बंद कर दें, संयम करें तो इस नौका के द्वारा पार पहुँचा जा सकेगा। तपस्या के द्वारा नौका आगे बढ़ेगी तो मोक्ष प्राप्त हो सकेगा। यह मानव औदारिक शरीर है, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। चारित्रात्माएँ व गृहस्थ ध्यान दें कि यह नौका सक्षम कैसे रहे?

शास्त्र में कहा गया है कि जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, शरीर सक्षम रहे, परवशता न रहे, जब तक शरीर में व्याधि-बीमारी न लगे, तब तक नौका हमारी ठीक है। धर्म का समाचरण कर लो। सेवा कर लो, नौका सक्षम हो तो लंबी यात्राएँ हो सकती हैं। गुरुदेव तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने तो अंतिम समय तक प्रवचन किया था।

शरीर ठीक है, तो साहित्य का काम कर लो, तपस्या कर लो। हमें यह चारित्र का जीवन, अध्यात्म का जीवन प्राप्त है। हम तो धन्य हो गए, जो अध्यात्म के पथ पर आ गए। चारित्र रत्न मिलना बहुत बड़ी बात है। बहुत कीमती है, इसकी सुरक्षा करें। इसका हम धर्म में उपयोग कर संसार अरणव को पार करें। मोक्षश्री का वरण करें।

पूज्यप्रवर ने स्कूल की विद्यार्थिनियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्त के संकल्प समझाकर स्वीकार करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान प्राप्ति का उत्कृष्ट माध्यम है स्वाध्याय : आचार्यश्री महाश्रमण

सिणधरी (बाड़मेर), २ फरवरी, २०२३

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः कड़कती ठंड में डंडाली से ६ किलोमीटर का विहार कर सिणधरी के नवकार स्कूल में पधारे। महायोगी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान प्राप्ति का एक सामान्य उपाय है—स्वाध्याय। श्रुत, मनन-प्रश्न आदि करने से ज्ञान का विकास हो सकता है।

स्वाध्याय करने में कुछ बाधाएँ भी होती हैं। जैसे एक बाधा है—नींद की बहुलता। नींद को बहुमान देना। अपेक्षानुसार नींद ली जा सकती है। दूसरी बाधा है—मनोरंजन में ज्यादा रस लेना। अनावश्यक बातें करना एवं विषयों में रस लेना। इनसे ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक को बचना चाहिए।

स्वाध्याय के पाँच प्रकार बताए गए हैं—वंचना, अध्यापन करना और कराना। अध्यापन से ज्ञान की परंपरा अविच्छिन्न रह सकती है। आगे से आगे बढ़ाने से ज्ञान की परंपरा अनवरत रह सकती है। पढ़ाया न जाए या पढ़ने वाला न मिले तो ज्ञान का लोप हो सकता है। पढ़ने वाला योग्य हो तो ज्ञान उसके पास जाए। पढ़ने वाले में पात्रता हो तो ज्ञान उसे दिया जा सकता है और वो ग्रहण भी कर सकता है। अपात्र हो तो गड़बड़ी हो सकती है।

जब स्थूलीभद्र स्वामी में थोड़ा अहंकार आ गया तो भद्रबाहु स्वामी ने दस पूर्वों का ज्ञान तो अर्थसहित दे दिया परंतु चार पूर्वों का ज्ञान अर्थ सहित नहीं दिया। मानो ताला दे दिया पर चाबी नहीं दी। विद्यार्थी में ज्ञान लेने की पात्रता होनी चाहिए। भद्रबाहु के बाद चौदह पूर्वधारी नहीं हुए।

विद्यालय-महाविद्यालय में ज्ञान की परंपरा अविच्छन्न चल रही है। आज नवकार विद्यालय में आए हैं। यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी नवकार मंत्र को स्मरण करते रहें। ज्ञानदाता और ज्ञान के प्रति विनय-सम्मान का भाव हो। साथ में बुद्धि अच्छी हो तो विद्यार्थी आगे बढ़ सकता है। मुनि जीतमल जी मुनि हेमराज जी से ज्ञान ग्रहण कर श्रुतधर बन गए थे। 'भगवती' जैसे राजस्थानी ग्रंथों की रचना कर दी।

विद्यालय में विद्यार्थियों में ज्ञान विकास के साथ अच्छे संस्कारों का भी विकास हो। ज्ञान प्राप्ति के लिए परिश्रम करना पड़ता है। कंठस्थ ज्ञान हो। ज्ञान को कंठस्थ बनाने के लिए चितारते रहो। नहीं पलटने से पान सड़ जाता है, घोड़ा अड़ जाता है। विद्या विस्मृत हो जाती है एवं रोटी अंगारों पर जल जाती है। स्वाध्याय का फेरा चलते रहना चाहिए। स्वाध्याय ज्ञान प्राप्ति का अच्छा माध्यम है। अनुप्रेक्षा भी करो और पृच्छना भी करो। साथ में धर्म कथा भी करो। हम स्वाध्यायशील बनने का और बने रहने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में तपागच्छ संघ से भैरूलाल हरणेशा, खरतरगच्छ संघ से सोहनलाल मंडोवरा एवं ललित देसाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन के हर कार्य में हो धर्म का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शारीरिक विकास के साथ मानसिक और भावनात्मक विकास भी हो। यह एक प्रसंग से समझाया कि गुरु जो समझाते हैं, उसे ध्यान से सुनकर जीवन में उतारें। भगवान तो सब जगह देखते हैं। पढ़ाई अच्छी होनी चाहिए। अंक मात्र पाने से क्या होगा। हमें योग्यता के आधार पर अंक मिलें। अहिंसा आदि प्रवृत्ति से कल्याण हो सकता है।

परिषद् में उपस्थित सभी लोगों को पूज्यप्रवर ने तीन प्रतिज्ञाएँ—सद्भावना, ईमानदारी और नशामुक्ति को समझाकर सभी को स्वीकार करवाई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय में प्रिंसिपल गणेशाराम चौधरी, बावतरा गाँव के ठाकुर बगतसिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति ने विद्यालय परिवार का सम्मान प्रतीक चिह्न से किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

गंगाशहर

मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिवस के आयोजन पर सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कीर्तिलता जी ने मर्यादाओं को जीवन का सार बताते हुए कहा कि धर्मशासन हमारा आधार है तथा आचार्य की दृष्टि की आराधना ही हमारे विकास का सूत्रधार है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए संजू लालाणी ने मर्यादा महोत्सव के इतिहास की जानकारी देते हुए कहा कि आचार्यश्री भिक्षु द्वारा विक्रम संवत् १८३२ में लिखित मर्यादाओं का वाचन हर वर्ष मर्यादा महोत्सव के अवसर पर किया जाता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रिया पारख द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने मर्यादाओं के महत्त्व पर प्रकाश डाला। महिला मंडल ने गीतिका का संगान किया। तेयुप के अध्यक्ष अरुण नाहटा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, किशोर मंडल सह-संयोजक संदीप रांका, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका कनक गोलछा उपासिका शारदा छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। भंवरलाल डाकलिया व चैनरूप छाजेड़ ने गीतिका का संगान किया।

खांडवा (चुरू)

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के १५९वें मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम उल्लासपूर्वक मनाया गया। साध्वी संघप्रभा जी ने इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मर्यादा महोत्सव का समय वस्तुतः तेरापंथ के गौरवशाली अतीत के पुण्य स्मरण, स्वर्णिम वर्तमान में दृश्यांकन एवं उज्ज्वल भविष्य के शुभचिंतन का समय है। आचार्य भिक्षु एक महान मर्यादा पुरुषोत्तम संत थे। उन्होंने स्वयं को अनुशासन की कड़ी कसौटी पर कसकर एक अनुशासित संगठन का निर्माण किया। उसी संगठन का नाम है–तेरापंथ। तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य ने उन्हीं मर्यादाओं के आधार पर मर्यादा महोत्सव का रूप देकर धर्मसंघ को नई प्राणवत्ता और चिर जीवंतता प्रदान की।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी प्राज्ञप्रभा जी द्वारा प्रस्तुत मर्यादा गीत से हुआ। अभिव्यक्ति के क्रम में कन्या मंडल की ओर से अरुणा भंसाली, सरिता सेन, तेरापंथ सभा की तरफ से बजरंग लाल भंसाली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अनुशासन की महत्ता को उजागर किया।

तेममं की सदस्या संतोष देवी छाजेड़ ने भाषण व अन्य बहनों ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी प्रांशुप्रभा जी व साध्वी प्राज्ञप्रभा जी द्वारा प्रस्तुत रोचक परिसंवाद-युक्त गीतमय स्वरलहरी ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया।

मर्यादा महोत्सव के विविध आयोजन

आयोजन की समग्र व्यवस्था तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार भंसाली व उनकी सहयोगी टीम द्वारा की गई। इस अवसर पर अच्छी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रात्रिकालीन चरण में सभा के मंत्री रामलाल छाजेड़ द्वारा गीत प्रस्तुत किया।

सूरत

तेरापंथ भवन सिटीलाइट, सूरत में तेरापंथ धर्मसंघ के १५९वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन मुनि उदित कुमार जी, मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि पुलकित कुमार जी, शासनश्री साध्वी मधुबाला जी, साध्वी लब्धिश्री जी एवं साध्वी सम्यक्प्रभा जी इन ६ सिंघाड़ा (ग्रुप) के सान्निध्य में आयोजित हुआ। सूरत शहर में यह पहला अवसर था जब ६ सिंघाड़ों के सान्निध्य में किसी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में २१ साधु-साध्वियों की उपस्थिति थी।

मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि पुलकित कुमार जी, साध्वी लब्धिश्री जी, साध्वी सम्यक्प्रभा जी, मुनि ज्योतिर्मयकुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी, मुनि आदित्य कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी, साध्वी मंजुलयशा जी ने मर्यादा और अनुशासन से संबंधित अपने विचार प्रकट किए।

मुनि उदित कुमार जी ने इस प्रसंग पर प्रेरणा पाथेय देते हुए तेरापंथ के तेजस्विता के सूत्रों की चर्चा की। इस कार्यक्रम में तेरापंथी समाज, सूरत, तेरापंथी समाज उधना, साध्वीवृंद का सामूहिक गीत हुआ। सिटीलाइट ज्ञानशाला के बच्चों ने मर्यादा से संबंधित अपनी मनमोहक अभिव्यक्ति दी।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि अनंत कुमार जी ने किया। कार्यक्रम के अंत में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा ने अपनी कोर टीम की घोषणा की।

जसोल

सेवा केंद्र व्यवस्थापक तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी ने कहा कि भारत की वसुंधरा ऋषि प्रधान है, भारतीय संस्कृति में दो प्रकार की पद्धतियों का प्रचलन है–श्रमण संस्कृति और वैदिक संस्कृति। इन संस्कृतियों में अनेक पर्व मनाए जाते हैं।

श्रमण परंपरा में तेरापंथ धर्म शासन एक प्राणवान, ऊर्जावान, जीवंत जयवंता धर्मसंघ है। सुसंगठित और मर्यादित संघ है। इसके पीछे शासन की गौरवमय गरिमा, आचार्य भिक्षु का त्याग, संयम, साधना और बलिदान है।

आवश्यकता है, मर्यादा के प्रति श्रद्धा। श्रद्धा नहीं होगी तो मर्यादा टूट जाएगी। मर्यादा महोत्सव तेरापंथ का महाकुंभ है, इससे हम पुनः तरोताजा होकर अपने आत्मकल्याण के लक्ष्य और संघबद्ध साधना पर व्यवस्थित प्रस्थान करते हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनि जिज्ञासु कुमार जी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। हुकमाराम बरबड़, रेखाराम गोधारा, सभा मंत्री चमन दुधोड़िया आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन प्रदीप सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन विनोद नाहटा ने किया।

श्यामनगर, जयपुर

शासन गौरव बहुश्रुत परिषद् की सदस्या साध्वी कनकश्री जी व विदुषी साध्वी अणिमाश्री जी के संयुक्त सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर द्वारा मर्यादा महोत्सव का आयोजन संपन्न हुआ। कन्या मंडल द्वारा मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु, प्रज्ञापुरुष जयाचार्य, गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी एवं प्रेक्षा प्रेरणा आचार्यश्री महाप्रज्ञ सदा प्रणम्य हैं। आचार्य भिक्षु ने अपने अनुभवों की स्याही और फौलादी कलम से जो मर्यादाएँ लिखीं, उनका शाश्वत मूल्य है। जयाचार्य ने मर्यादा का महोत्सव प्रतिष्ठित कर आध्यात्मिक विकास के नए क्षितिज खोले। गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपने संघ को आधुनिक ढंग से प्रशिक्षित किया, उसे संवारा, निखारा और लोक जीवन में मर्यादा अनुशासन की मूल्य प्रतिष्ठा की। मर्यादा महोत्सव को मानवता का उत्सव बनाया।

आचार्यश्री महाश्रमण को मर्यादा, आत्मानुशासन और करुणापूरित एवं मृदुअनुशासन संघीय चेतना को नया निखार दे रहा है। साध्वीश्री जी ने कहा कि गुरु के सामने तर्क मत करो। उनके आदेश, निर्देश और निर्णय को विनम्रता से स्वीकार करो।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि मर्यादा लक्ष्मण रेखा है। महासती सीता ने लक्ष्मण रेखा का अतिक्रमण किया तो घोर संकट में फँस गई। उसी प्रकार मर्यादा का उल्लंघन करने से जीवन में संकटों का सामना करना पड़ सकता है।

मर्यादा तेरापंथ धर्मसंघ की शान है। भिक्षुकृत मौलिक मर्यादाओं में अहंकार और ममकार के विसर्जन का सशक्त संदेश है। इस असहिष्णुता के युग में मर्यादा व अनुशासन से विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

साध्वी मधुलता जी ने कहा कि स्वामी जी ने स्वयं संघर्षों को झेला और हमें उपहार में नंदनवन दिया। तेरापंथ धर्मसंघ की नींव को फौलादी तत्त्वों से मजबूत बनाया, जिसे विश्व की कोई भी ताकत हिला नहीं सकती। आज आधुनिकता के नाम पर मर्यादा व अनुशासन का अवमूल्यन हो रहा है। ऐसी स्थिति में तेरापंथ धर्मसंघ विश्व के लिए एक उदाहरण है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि मर्यादा को भार नहीं गले का हार समझें, बंधन नहीं मुक्ति का द्वार समझें।

शासन गौरव साध्वीश्री जी द्वारा रचित गीत को जब साध्वी मधुलता जी आदि साध्वियों ने स्वर दिया तो अनूठा समा बांध दिया।

सी-स्कीम, जयपुर महिला मंडल ने गीतिका की प्रस्तुति दी। सी-स्कीम महिला मंडल की अध्यक्षा नीरू पुगलिया, शहर महिला मंडल की उपमंत्री वीणा लुणिया व सभा मंत्री सुरेंद्र सेखानी ने भी अपने श्रद्धा-भक्ति से ओत-प्रोत भाव सुमन प्रस्तुत किए। मंच का संचालन सुशीला नखत ने किया।

औरंगाबाद

१५९वें मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम साध्वी मधुस्मिता जी एवं साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में महावीर भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा गीत से हुआ। सभा के अध्यक्ष कौशिक सुराणा एवं महिला मंडल अध्यक्ष अनामिका धोका ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। तेयुप के मंत्री अंकुर लुणिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

महिला मंडल एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की संयुक्त प्रस्तुति ने मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी सहजयशा जी ने दीक्षा की रजत जयंती के शुभ रोचक स्मरणों को अभिव्यक्ति दी। साध्वी रश्मिप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक विकासशील, मर्यादित, अनुशासित धर्मसंघ है।

साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि जीवन में मर्यादा रूपी सारथी है तब तक कल्याण का पथ प्रशस्त होता रहेगा। मर्यादा का अर्थ है विकास और अतिक्रमण का अर्थ है विनाश। तेरापंथ धर्मसंघ बेजोड़ धर्मसंघ है।

ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका मुक्ता दुगड़ ने डॉक्टरों का परिचय प्रस्तुत किया व उन्हें सम्मानित करने का आह्वान किया। डॉ० श्रेयस रुणवाल एवं श्रद्धा गादिया को सभा की ओर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया। कार्यक्रम में हैदराबाद, बीड़ जालना, परभणी एवं सिल्लोड क्षेत्रों से उपस्थिति रही।

राउरकेला

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि पूरी दुनिया में एकमात्र तेरापंथ धर्मसंघ है जो मर्यादाओं का महोत्सव मनाता है। यह अपने आपमें अनूठा आकर्षण एवं प्रेरणादायक महोत्सव है। अनुशासन ही तेरापंथ का मूलमंत्र है। जैन आगमों के अनुसार मुनिचर्या का पालन करते हुए तेरापंथ संघ के साधु-साध्वी ने और संपूर्ण संघ ने विकास के अनेक नए आयाम खोले हैं। इसका मूल आधार है एक गुरु का अनुशासन।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि अनुशासन और मर्यादा का पालन ही मर्यादा का सबसे बड़ा सम्मान है। तेरापंथ धर्मसंघ में अनुशासन को सर्वोपरि महत्त्व दिया गया है।

तेरापंथ सभा ने जानकारी देते हुए बताया कि हाजरी वाचन के पश्चात दोनों ही संतों ने खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेयुप अध्यक्ष हितेश बोथरा ने किया। जैन संस्कारक रूपचंद बोथरा, ललिता भंसाली, राजगांगपुर सभा अध्यक्ष हेमंत कोठारी, स्नेहलता चोरड़िया, रंजना भंसाली, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, उपासक पानमल नाहटा, कांटाबाजी सभा सहमंत्री गजानन जैन, राउरकेला महिला मंडल अध्यक्ष सरोज गोलछा ने विचारों की प्रस्तुति दी। तेयुप, तेममं ने गीत की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दिनेश गिड़िया ने किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया। सम्मान कार्यक्रम का संचालन सिद्धार्थ कोचर ने किया। अतिथिगण का सम्मान सभा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केसिंगा, सिंधिकेला, कांटाबांजी, बेलपाड़ा, रामपुर पटनागढ़, झारसुगुड़ा, राजगांगपुर, रांची, कटक, बैंगलोर इत्यादि क्षेत्रों से श्रावक समाज उपस्थित रहा। संघगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

✦ *अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप से साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।*

✦ *अणुव्रत जीवन में आ जाता है तो मानना चाहिए कि जीवन में सदाचार आ गया।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ पत्नी, पुत्र और पैसे की प्राप्ति तो एक पापी को भी हो सकती है, किंतु सत्संग और धर्मकथा-श्रवण का अवसर दुर्लभ होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

गणतंत्र दिवस पर रैली का आयोजन

दिल्ली।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, दिल्ली द्वारा विवेक विहार स्थित कन्या सुरक्षा सर्कल पर गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रभक्ति के गीत गाते हुए रैली निकाली गई।

राष्ट्रीय ध्वज नीलम सेठिया की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल द्वारा फहराया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात स्थानीय मंत्री यशा बोथरा ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया।

ध्वज लहराने के साथ ही राष्ट्रगान का संगान किया गया। कन्या मंडल द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने मातृभूमि को प्रणाम करते हुए सफल कार्यक्रम की बधाई दी। विधान सभा अध्यक्ष ने महिला मंडल के कार्यों की सराहना की।

इस अवसर पर प्रीति बहन एवं दिल्ली सभा मंत्री प्रमोद घोड़ावत, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, ओसवाल भवन के पूर्वाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, मंत्री राजेंद्र सिंघी, अशोक बैद की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्वी दिल्ली संयोजिका मंजु बांठिया का विशेष श्रम रहा।

द पावर ऑफ रेसोल्यूशन शिल्पशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, हैदराबाद द्वारा द पावर ऑफ रेसोल्यूशन शिल्पशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र द्वारा शुभारंभ किया गया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

मंडल अध्यक्ष अनीता गिड़िया ने आई हुई सभी सुंदरी जोन, महावीर जोन की बहनों, मंडल पदाधिकारीगण, मुख्य वक्ता एवं मंडल सदस्यों का स्वागत, अभिनंदन किया। उन्होंने बताया कि हमारे भीतर शक्ति की नहीं, संकल्प की कमी होती है। संकल्प लेकर पुरुषार्थ करने वाला, अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करता है।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता प्रेम पारख ने बताया कि हर जीव में शक्ति होती है, किंतु संकल्प शक्ति केवल मनुष्य में ही होती है। कोषाध्यक्ष शांता बैद ने बताया कि हमें अपने व्यस्त जीवन में, लक्षित कार्यों के लिए समय जरूर निकालना चाहिए। हम छोटे-छोटे संकल्प करें। अपने जीवन से 'यह कार्य तो असंभव है' शब्दों को निकाल देना चाहिए।

हर्ष लता दुधोड़िया ने एक रोचक कहानी द्वारा संकल्प शक्ति का महत्त्व बताया। कार्यशाला के अंत में उपाध्यक्ष सरला मेहता द्वारा आई हुई सभी वक्ताओं एवं बहनों का आभार ज्ञापन किया गया। कार्यशाला में अहिंसा, हिंसा के पोस्टर्स का प्रचार-प्रसार किया गया। विभिन्न स्थानों पर स्लोगन्स चिपकाए गए। संयोजन संयोजिका हर्षलता दुधोड़िया, शांता बैद का रहा।

कार्यशाला में अल्पना दुगड़, सीमा नाहर, रूपी दुगड़, मनीषा सिंघी, हेमा सुतरिया, प्रेम सुराणा, सोबाग बांठिया, नमिता सिंघी, सुमन दुगड़, वीनू नाहटा सहित अनेक सदस्यों एवं बहनों की उपस्थिति रही।

बाल मंदिर पब्लिक स्कूल में पुस्तकालय का लोकार्पण

सरदारपुरा, जोधपुर।

अभातेमम के निर्देशन में तेमम, सरदारपुरा, जोधपुर द्वारा बाल मंदिर पब्लिक स्कूल में अभातेमम के राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया के करकमलों से पुस्तकालय का उद्घाटन हुआ। कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा तिलक लगाकर अध्यक्षा तथा उनकी टीम का स्वागत किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा सरिता कांकरिया, मंत्री चंद्रा जीरावला तथा उनकी साथी बहनों ने मोतियों की माला पहनाकर अतिथियों का स्वागत किया।

महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से कार्यक्रम शुभारंभ किया। अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने स्वागत भाषण दिया तथा पधारे हुए अतिथियों का स्वागत किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने नमस्कार महामंत्रोच्चार से पुस्तकालय का उद्घाटन किया।

अध्यक्ष नीलम सेठिया ने पुस्तकालय के महत्त्व के बारे में बताया और कहा कि पुस्तकालय का उपयोग अपनी रुचि के लिए करना चाहिए। उन्होंने बच्चों की रुचि के हिसाब से किताबों की लिस्ट बनाकर देने के लिए कहा ताकि वह बुक महिला मंडल विद्यालय परिवार को उपलब्ध करवा सके। स्कूल की प्रिंसिपल, विशिष्ट अतिथि, मोनिका चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए।

स्कूल की प्रिंसिपल तथा अध्यापिकाओं ने मोमेंटो एवं शॉल ओढ़ाकर पधारे हुए अतिथियों का सम्मान किया। आभार ज्ञापन निवर्तमान अध्यक्ष विमला बैद ने किया। कार्यक्रम में जी०एल० मेहता विशिष्ट अतिथि एवं स्वाति भंसाली अतिथि विशेष के रूप में आमंत्रित थे।

इस अवसर पर अभातेमम कार्यकारिणी सदस्या उषा जैन, विनीता बैंगानी, एसोसिएट मेंबर मोनिका चोरड़िया की उपस्थिति रही।

पुस्तकालय के लिए १० बेंच एवं ३ रैक महिला मंडल की ओर से विद्यालय को भेंट कराए गए। ट्रस्टी उमेद सिंघवी, तेयुप, सरदारपुरा के सदस्य, अध्यापिकाएँ एवं विद्यालय के बच्चे, तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याएँ कार्यक्रम में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन मंत्री चंद्रा जीरावला ने किया।

परोपकार विषय पर कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम, चेन्नई के तत्त्वावधान में निर्माण के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की' प्रोजेक्ट पट्टालम जैन विद्यालय में किया गया। केंद्र द्वारा प्रदत्त ८ कार्यशाला को ५वीं से ८वीं कक्षा के बच्चों को ८ विषय पर अलग-अलग कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। प्रोजेक्ट के द्वितीय विषय 'परोपकार' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा गीत महिला मंडल द्वारा हुआ। अभातेमम के इस प्रोजेक्ट को मंत्री रीमा सिंघवी ने बार-बार एक ही क्लास के बच्चों को कराने का उद्देश्य बताया एवं अपने जीवन में इस कार्यशाला को उतारने की प्रेरणा दी। बच्चों को महापुरुष के घटना के अंतर्गत संयोजिका सुभद्रा लुणावत ने महाराणा प्रताप की कहानी सुनाई एवं आसन के अंतर्गत ताड़ासन कराया गया।

हिंदी में परोपकार विषय पर दीपाली सेठिया ने स्टोरी बताई एवं संकल्प कराए। समसामायिक विषय पर व्यक्तिगत स्वच्छता कैसे रखें, इस विषय पर संयोजिका गुणवंती खांटेड़ एवं लीला सेठिया ने पोस्टर के माध्यम से प्रस्तुति दी।

निर्माण प्रोजेक्ट के प्रायोजक दिलीप कुमार-नितेश कुमार गोलेच्छा की तरफ से बच्चों को पुरस्कार प्रदान करवाया गया।

संस्कार निर्माण परियोजना

भीलवाड़ा।

अभातेमम के निर्देशानुसार निर्माण परियोजना के अंतर्गत 'उम्मीद-एक बेहतर कल की' कार्यशाला का प्रथम चरण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वार्ड नं० ८ भीलवाड़ा में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला में ५वीं से ८वीं कक्षा तक के विद्यार्थी उपस्थित थे। प्रोजेक्टर संयोजिका सुमन दुगड़ के संयोजन में कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत के संगान से किया गया।

महिला मंडल की अध्यक्षा मीना बाबेल ने बच्चों को संस्कारवान बनाने की दृष्टि से अभातेमम के इस सार्थक प्रयास की प्रशंसा की और कहा कि आज के बच्चे आने वाले कल का भविष्य हैं।

मोनिका दुगड़ ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि, सुमन लोढ़ा ने ध्यान की महत्ता, ज्योति दुगड़ ने ईमानदारी जैसे नैतिक विषय पर रोचक कहानी सुनाई। कोमल कावड़िया ने बच्चें को ताड़ासन, वज्रासन आदि योगाभ्यास कराए।

दीप्ति चोरड़िया ने त्याग, बलिदान एवं भक्ति को दर्शाता पन्नाधाय का प्रेरक प्रसंग बताया। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि प्रिंसिपल विजय लक्ष्मी वर्मा एवं स्कूल स्टाफ ने बच्चों को संस्कारवान बनाने की दिशा में एवं वातावरण के प्रति जागरूकता लाने में महिला मंडल के इस कार्यक्रम की सराहना की।

कार्यक्रम के बीच-बीच में जनरल नॉलेज के रोचक प्रश्न बच्चों से पूछे गए। अध्यक्षा मीना बाबेल, सुमन बनवट मोनिका आंचलिया, कुसुम चौधरी, चंदा मेड़तवाल एवं टीम द्वारा बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। सभी बच्चों को झूठा न डालने का संकल्प दिलाया गया। सभी बहनों के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

उम्मीद एक बेहतर कल की

भीलवाड़ा।

अभातेमम के निर्देशानुसार संस्कार निर्माण परियोजना के अंतर्गत उम्मीद एक बेहतर कल की कार्यशाला का प्रथम चरण राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सिंधु नगर, भीलवाड़ा में तेमम की बहनों द्वारा आयोजित किया गया। कार्यशाला में ५वीं से ८वीं कक्षा तक के विद्यार्थी उपस्थित थे। मंत्री रेणु चोरड़िया ने कहा कि नैतिकता, प्रामाणिकता अपनाकर आज के बच्चे सुंदर सुदृढ़ भारत का निर्माण कर सकते हैं। प्रोजेक्ट संयोजिका स्नेहलता झाबक के संयोजन में कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत के संगान से किया।

इसी क्रम में अनीता हिरण ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि, ज्ञान मुद्रा लाफिंग कराते हुए उसके लाभ बताए। चंदा खाब्या ने माता-पिता की आज्ञा का पालन विषय पर रोचक कहानी सुनाई। कनकलता गोखरू ने त्याग, बलिदान एवं भक्ति को दर्शाता पन्नाधाय का प्रेरक प्रसंग बताया।

पुष्पा पामेचा ने बच्चों को बताया कि कैसे स्वयं स्वच्छ रहकर स्वस्थ रह सकते हैं, आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ रख सकते हैं। प्रिंसिपल एवं स्कूल स्टाफ ने बच्चों को संस्कारवान बनाने की दिशा में एवं वातावरण के प्रति जागरूकता लाने में महिला मंडल के इस कार्यक्रम की सराहना की।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि कार्यक्रम के बीच-बीच में रोचक प्रश्न बच्चों से पूछे गए। मंत्री शोभना सिरोहिया एवं टीम द्वारा बच्चों को पुरस्कार वितरित किए गए। सभी बहनों के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा।

हिंसा बनाम अहिंसा कार्यशाला का आयोजन

मध्य उत्तर कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अभातेमम के निर्देशानुसार मध्य उत्तर कोलकाता तेमम ने 'हिंसा बनाम अहिंसा कार्यशाला' का कार्यक्रम अरिहंत आवास में हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि भगवान महावीर ने अहिंसा व हिंसा दो मार्ग बताए हैं—अहिंसा सुमार्ग है, हिंसा कुमार्ग है। अहिंसा का विकास संयम तप से होता है। हिंसा का विकास असंयम व भोग से होता है। हिंसा में अशांति है, अहिंसा में शांति है। हमेशा हिंसा पर अहिंसा की विजय हुई। अहिंसा भारतीय दर्शन की आत्मा है। अहिंसा संजीवनी औषध है। अहिंसा के विकास से ही व्यक्ति आंतरिक सौंदर्य को प्राप्त होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि श्रावक कौन होता है जो अल्पारंभी व अल्प परिग्रही है। व्यक्ति के जीवन में हिंसा व परिग्रह का जितना संयम होगा उतना ही वह सुखी होगा।

मुनि कुणाल कुमार जी ने मधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ बहनों ने प्रेरणा गीत द्वारा किया। स्वागत भाषण मध्य उत्तर कोलकाता, तेमम की अध्यक्षा संगीता लुणिया व संचालन मंत्री सपना बिरमेचा ने किया। इस अवसर पर तेमम की बहनों द्वारा पोस्टर का अनावरण किया गया।

✦ दूसरी कीमती चीजें यदि खो जाएँ तो उन्हें दुबारा प्राप्त किया जा सकता है, किंतु समय एक ऐसी चीज है, जिसे खोने के बाद दुबारा कभी नहीं पाया जा सकता।

– आचार्यश्री महाश्रमण

मंगलभावना समारोह का आयोजन

विजयवाड़ा।
साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का मंगल भावना समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि हमारी धर्मचेतना विशुद्ध रहे। धर्म मन शुद्धि और आत्म शुद्धि की दवा है। हमारा पहला कर्तव्य है व्यवहार बदलें। धर्म का आदि बिंदु है करुणा का विकास, संवेदनशीलता अपनी ओर से किसी को पीड़ित न करे, कटु व्यवहार न करें।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हर व्यक्ति के प्रति संवेदनशील व्यवहार करने का प्रयास हो। मंगलभावनाओं का अवतरण सभी के भीतर होता रहे। हम यही कामना करें—हर व्यक्ति का मंगल हो।

तेरापंथ महासभा सदस्य और तेलंगाना-आंध्र प्रदेश प्रभारी नरेंद्र नाहटा ने कहा कि विजयवाड़ा वासियों के लिए सौभाग्य की बात है जिन्हें मुनि दीप कुमार जी और साध्वी मंगलप्रज्ञा जी जैसा पावन प्रवास प्राप्त हुआ।

नरपत सेठिया ने कहा कि इस प्रवास में हमने बहुत कुछ सीखा है। साध्वीश्री का प्रयास हमें याद रहेगा। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक बागरेचा ने अपने कृतज्ञ भाव व्यक्त किए। विधि कुंडलिया और दीपेश कुंडलिया ने अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें तेरापंथ शासन मिला। साध्वीवृंद ने यहाँ प्रवासित परिवारों के नामों का उल्लेख करते हुए भावगीत प्रस्तुत किया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष राजेंद्र कोचर ने मंच संचालन किया।

मंगल मिलन समारोह का आयोजन

विजयवाड़ा।
मुनि दीप कुमार जी का विजयवाड़ा में प्रवेश हुआ। यहाँ मुनिश्री का साध्वी मंगलप्रज्ञा जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। मुनिश्री और साध्वीश्री जी ने एक-दूसरे के प्रति प्रमोद भावना व्यक्त की। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि हमें अपने जीवन में दो केंद्रों की सतत आराधना करनी चाहिए। पहला—आत्मा का केंद्र, आत्म विस्मृति करके हमारी साधना कभी सफल नहीं हो सकती। दूसरा—गुरु का केंद्र, गुरु हमारी साधना रूपी नाव के खेवनहार होते हैं। गुरु निष्ठा हमारी बलवान रहनी चाहिए। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी हमारे धर्मसंघ की प्रबुद्ध एवं विदुषी साध्वी हैं। लंबे समय समणी पर्याय में रहीं, बहुत सेवाएँ दी। समणी नियोजिका रहीं, वाइस चांसलर रहीं। हम सभी संघ सेवा करते रहें।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसा धर्मसंघ हमें मिला। आचार्यश्री महाश्रमण जी जैसे गुरु हमें प्राप्त हुए। साधु-साध्वियों के मिलन से मन में प्रसन्नता हो रही है।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि यह मिलन का प्रसंग बहुत हर्ष का होता है। मुनि दीप कुमार जी सेवाभावी संत हैं। इन्होंने शासन गौरव मुनि राकेश कुमार जी स्वामी की बहुत सेवा की। उनके तन की पछेवड़ी बनकर रहे। मुनि काव्य कुमार जी को हमने मुमुक्षु बनाकर भेजा था। आज वे मुनि रूप में हैं। बहुत प्रसन्नता हो रही है।

कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष अशोक बरमेचा, महासभा प्रभारी नरेंद्र नहारा, विमल बैद, नरपत सेठिया, विनीता कुंडलिया आदि ने मुनिश्री के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। तेममं ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। संचालन राजेंद्र कोचर ने किया।

गणतंत्र दिवस पर जाँच शिविर

जयपुर।
गणतंत्र दिवस के अवसर पर आचार्य तुलसी डाग्यनोस्टिक सेंटर, जयपुर में जनसेवा के उद्देश्य से सीबीसी, थायराइड प्रोफाइल, लिपिड प्रोफाइल, लीवर प्रोफाइल, किडनी प्रोफाइल, इलेक्ट्रोलेट्स जाँचें करने से सैकड़ों की संख्या में जन-सामान्य लाभान्वित हुआ।

इस अवसर पर न्यास के चेयरमैन सुरेंद्र नाहटा, उपाध्यक्ष ललित बैंगानी, कोषाध्यक्ष रवि छाजेड़, संयोजक श्रेयांस बैंगानी, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद, गौतम बरड़िया, सौरभ जैन सहित आमजन की उपस्थिति रही।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेयुप जयपुर के द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में चेयरमैन सुरेंद्र नाहटा सहित अन्य पदाधिकारीगण एवं आमजन की उपस्थिति में झंडारोहण किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

दिल्ली।
मनेंद्रगढ़ रायपुर प्रवासी, गुडगाँव निवासी श्रेयांस-प्रीति बैद के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, महेंद्र श्यामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारक महेंद्र श्यामसुखा ने सभी पधारे हुए पारिवारिकजनों व अतिथियों का तेयुप, दिल्ली व संस्कारकों की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से बैद परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

दिल्ली।
रामपुरी (यूपी) प्रवासी बसंत-अर्चना चोरड़िया के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक विमल गुनेचा, महेंद्र श्यामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

संस्कारक महेंद्र श्यामसुखा ने सभी पधारे हुए पारिवारिकजनों व अतिथियों का तेयुप, दिल्ली व संस्कारकों की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से चोरड़िया परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

दिल्ली।
सरदारशहर निवासी, गुरुग्राम प्रवासी आदित्यविक्रम-पूजा पटावरी के सुपुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, हितेश सुराणा ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारक हितेश सुराणा ने पधारे हुए सभी पारिवारिकजनों व अतिथियों का तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से पटावरी परिवार को मंगलभावना यंत्र भेट किया गया।

गंगाशहर।
भीनासर निवासी रोहित-निधि सेठिया के नवजात पुत्र रत्न नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार सहित संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, भीनासर के पूर्व अध्यक्ष नेमचंद सेठिया और पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

चेन्नई।
विकास कुमार रजत कुमार सेठिया के नव प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा समायोजित हुआ।

नमस्कार महामंत्र से शुभारंभ संस्कार विधि में अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा ने स्वागत स्वर देते हुए जैन संस्कार विधि की महत्ता, उपयोगिता के बारे में बताया।

संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुखलेचा, रोशन बोथरा ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ विधि परिसंपन्न करवाई।

विकास कुमार सेठिया ने संस्कारकों का आभार व्यक्त कया। अभातेयुप कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा ने सेठिया परिवार को अभातेयुप और तेयुप, चेन्नई की ओर से धन्यवाद दिया। इस अवसर पर सेठिया परिवार के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पाणिग्रहण संस्कार

राजाजीनगर।
मरुधर में बगड़ी प्रवासी, बैंगलुरु निवासी महावीर संचेती के सुपुत्र राहुल संचेती एवं मरुधर में ब्यावर निवासी कैलाशचंद बोहरा की सुपुत्री अंशु बोहरा का विवाह जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़, रनीत कोठारी एवं अरविंद दुगड़ ने नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण द्वारा संपन्न करवाया।

परिषद परिवार द्वारा प्रमाण पत्र एवं मंगलभावना यंत्र वर-वधू को प्रदान किया गया।

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

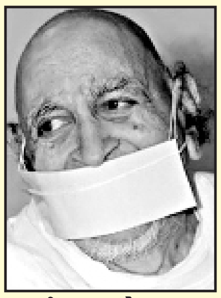

पहला प्रकरण

मिथ्यात्व से हमारे दृष्टिकोण में विपर्यय छा जाता है, इसलिए हम मुक्त भाव से सत्य का साक्षात् अनुभव नहीं कर पाते।

अव्रत के द्वारा हमारा मन आकांक्षाओं से भरा रहता है, इसलिए हम सहज स्वभाव की अनुभूति नहीं कर पाते।

प्रमाद के द्वारा आत्म-दर्शन के प्रति अलसता उत्पन्न हो जाती है, फलतः हम अपने स्वरूप की उपलब्धि के लिए जागरूक नहीं रह पाते।

कषाय के द्वारा हमारी आत्मा संतप्त रहती है इसलिए हम सहज शांति का अनुभव नहीं कर पाते।

प्रवृत्ति के द्वारा हमारी सहज स्थिरता समाप्त हो जाती है, इसलिए हम आत्म-उपलब्धि के लिए केंद्रित नहीं हो पाते।

इस प्रकार आस्रव के द्वारा हमारी चेतना बंधी हुई रहती है। जीवन-पथ की दीर्घ यात्रा में काल-विपाक के कारण कोई क्षण ऐसा आता है कि आत्मा में मुक्ति की भावना जाग उठती है। उसकी पूर्ति के लिए योगसाधना का सहारा लिया जाता है। उसका मुख्य हेतु संवर है, ठीक आस्रव का प्रतिपक्ष। आस्रव के द्वारा हम आत्म-स्वभाव की अनुभूति से दूर रहते हैं और संवर के द्वारा हम आत्म-स्वभाव की अनुभूति मे प्रवृत्त हो जाते हैं। जैसे ही हमें देह और आत्मा का भेदज्ञान होता है, वैसे ही हमारा मिथ्या दृष्टिकोण समाप्त हो जाता है। जैसे ही हमें आत्म-स्वभाव की अनुभूति होती है, हमारी आकांक्षाओं का स्रोत रुक जाता है। जैसे ही हम आत्म-उपलब्धि के प्रति जागरूक होते हैं, हमारा बाह्य जगत् के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है। जैसे ही हम सहज शांति के अनुभव में लीन होते हैं, हमारा मानसिक संताप विलीन हो जाता है। जैसे ही हम स्वानुभूति में निष्पंद होते हैं, हमारी प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है।

मन, वाणी और कर्म का स्पंदन होता है, तब हम बाह्य जगत् के संपर्क में रहते हैं और जब ये निष्पन्द हो जाते हैं, तब हम अंतर्जगत् या अपने स्वभाव में चले जाते हैं। इसी प्रकार संताप, आकर्षण, आकांक्षा और मिथ्या दृष्टिकोण हमें बाह्य की ओर उन्मुख करते हैं। सम्यक् दृष्टिकोण, सहज तृप्ति, सहज शांति और सहज आनंद हमें आत्मोन्मुखता ही संवर है। साधना का अर्थ ही है–आत्मविमुखता से हटकर आत्मोन्मुख होना। यम (महाव्रत), नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा आदि उसी की साधन-सामग्री हैं। ध्यान और समाधि संवर से भिन्न नहीं हैं। इसीलिए जैन योग में संवर ध्यान-योग का सर्वोपरि महत्त्व है।

(२७) इंद्रियानिन्द्रियातीन्द्रियाणिआत्मनो लिंगम्।।

(२७) इंद्रिय, मन और अतीन्द्रिय ज्ञान (योगी ज्ञान, प्रातिभ ज्ञान व प्रत्यक्ष ज्ञान) आत्मा को जानने के साधन हैं।

साधना का प्रयोजन

अध्यात्म की साधना करने वाले व्यक्ति का मन स्वस्थ रहता है। मन स्वस्थ रहता है, इसका अर्थ है कि शरीर भी स्वस्थ रहता है। शरीर स्वस्थ रहता है, इसका अर्थ है कि इंद्रियाँ निर्मल रहती हैं। बुद्धि भी निर्मल रहती है। इसी प्रकार स्वास्थ्य और निर्मलता–ये दोनों साधन के परिणाम हैं। ये परिणाम हैं किंतु मूलभूत प्रयोजन नहीं हैं। साधना का मूलभूत प्रयोजन है–सत्य का साक्षात्कार।

सत्य असीम है। हमारे इंद्रिय, मन और बुद्धि की शक्ति सीमित है। हम असीम साधनों के द्वारा असीम का साक्षात्कार नहीं कर सकते।

इंद्रिय, मन और बुद्धि के ज्ञान का मूल स्रोत आत्मा है। उसकी चैतन्य शक्ति असीम है। उसे अनावृत्त कर हम सत्य का साक्षात्कार कर सकते हैं। ध्यान का स्थिर अभ्यास किए बिना हम आत्मा की चैतन्य शक्ति का प्रत्यक्ष उपयोग नहीं कर सकते। इंद्रिय, मन और बुद्धि का संबंध स्थूल उपयोग नहीं कर सकते। इंद्रिय, मन और बुद्धि का संबंध स्थूल जगत् या स्थूल सत्य से होता है। उनमें सूक्ष्म सत्य तक पहुँचने की क्षमता नहीं है। ध्यान के द्वारा हम चेतना के सूक्ष्म स्तर तक चले जाते हैं। सूक्ष्म चैतन्य के द्वारा सूक्ष्म सत्य प्रत्यक्ष हो जाता है। इस प्रकार अतीन्द्रिय ज्ञान का विकास साधना का मुख्य प्रयोजन है।

अतीन्द्रिय ज्ञान व आत्म-साक्षात्कार में कोई भेद नहीं है। इसे आत्मोदय भी कहा जा सकता है।

दूसरा प्रकरण

(१) मूढ़-विक्षिप्त-यातायात-श्लिष्ट-सुलीन-निरुद्धभेदाद् मनः षोढा। (२) दृष्टिचरित्रमोह-परिव्याप्तं मूढम्।। (३) अनर्हमेतद् योगाय।। (४) इतस्ततो विचरणशीलं विक्षिप्तम्।। (५) कदाचिदन्तः कदाचिद् बर्हिर्विहारि यातायातम्।। (६) प्रारंभिकाभ्यासकारिणे द्वयमिदम्।। (७) विकल्पपूर्वकं बाह्यवस्तुनो ग्रहणाद् अल्पस्थैर्यं अल्पानन्दञ्च।। (८) स्थिरं श्लिष्टम्।। (९) सुस्थिरं सुलीनम्।। (१०) द्वयमिदं संजाताभ्यासस्य योगिनः।। (११) बाह्यवस्तुनः अग्रहणाद् दृढस्थैर्यं महानंदञ्च।। (१२) मनोगतध्येयमेवास्य विषयः।। (१३) निरालम्बनं केवलमात्मपरिणतं निरुद्धम्।। (१४) इदं वीतरागस्य।। (१५) सहजानंदप्रादुर्भावः।।

(१) मन छह प्रकार का होता है– (१) मूढ़, (२) विक्षिप्त, (३) यातायात, (४) श्लिष्ट, (५) सुलीन, (६) निरुद्ध।

(२) जो मन दृष्टिमोह (मिथ्यादृष्टि) तथा चरित्रमोह (मिथ्या आचार) से परिव्याप्त होता है, उसे मूढ़ कहा जाता है।

(३) मूढ़ संज्ञावाला मन योग-साधना के योग्य नहीं होता। जिसकी दृष्टि सम्यग् नहीं होती, जिसका चरित्र यम-नियम युक्त नहीं होता, वह व्यक्ति योग-साधना का अधिकारी नहीं होता।

(४) जो मन इधर-उधर विचरण करता रहता है, किसी एक विषय पर निश्चय नहीं रहता, उसे विक्षिप्त कहा जाता है।

(५) जो मन कभी अंतर्मुखी बनता है और कभी बहिर्मुखी–उसे यातायात कहा जाता है।

(६) विक्षिप्त और यातायात मन योग का प्रारंभिक अभ्यास करने वाले व्यक्तियों में होते हैं।

(७) इन दोनों मनोभूमिकाओं में विकल्पपूर्वक बाह्य वस्तुओं का ग्रहण होता रहता है। इसलिए इनमें स्थिरता अल्प मात्रा वाली एवं अल्पकालीन होती है तथा सहज आनंद का अनुभव भी अल्प होता है।

(८) अपने ध्येय में स्थिर बने हुए मन को श्लिष्ट कहा जाता है।

(९) जो मन अपने ध्येय में सुस्थिर बन जाता है, उसे सुलीन कहा जाता है।

(१०) ये दोनों मनोभूमिकाएँ परिपक्व अभ्यास वाले योगी के होती हैं।

(११) इसमें बाह्य वस्तुओं का ग्रहण नहीं होता, इसलिए इन भूमिकाओं में स्थिरता दृढ़ एवं चिरकालीन होती है तथा सहज आनंद का अनुभव भी विपुल होता है।

(१२) इस युगल (श्लिष्ट और सुलीन) का विषय मनोगत ध्येय ही होता है। यहाँ ध्येय सूक्ष्म और आत्मगत हो जाता है।

(१३) जब मन बाह्य आलंबन से शून्य होकर केवल आत्मपरिणत हो जाता है, तब उसे निरुद्ध कहा जाता है।

(१४) यह भूमिका वीतराग को प्राप्त होती है।

(१५) इसमें सहज आनंद प्रकट हो जाता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१२६)

छोड़ धरती को गया है जो फरिश्ता
क्या उसी से आसमां का शून्य भरता
जरूरी समझा अगर जाना वहाँ पर
क्यों नहीं सुरलोक से ही पीर हरता।।

मध्य दिन में जो हुआ ओझल अचानक
भानु वह आलोकधर्मी अब कहाँ है?
पता उसका पूछकर कोई बताए
देखने आतुर उसे सारा जहाँ है
सुधावर्षी जलद का सान्निध्य पाने
भावना का ज्वार मानस में उमड़ता।।

दीप जो जलता रहा नित आंधियों में
प्राप्त कर आलोक उससे मन भरा था
चीर लहरों को चला तूफान में था
आफतों का सिंधु उसने ही तरा था
युगों तक जिसको निहारा निकटता से
बिम्ब उसका पुतलियों में अब उभरता।।

लेप विस्मृति का लगाना चाहती थी
किंतु यादें हो रहीं हावी हृदय पर
एक दिन झुकते हुए नभ ने कहा था
आ रहा था साथ कोई नखत भास्वर
रोक उस पर लग रही चारों तरफ से
तब भला कैसे धरा पर वह उतरता।।

(१२७)

बिछ रहीं पलकें प्रतीक्षा में तुम्हारी
पर नहीं तुमको कभी हम याद आए
जागते-सोते तुम्हें मन से पुकारा
पर नहीं साक्षात तुमको देख पाए।।

क्यों नहीं सुनते हमारी प्रार्थना तुम
कौन-सा तुम पर लगा प्रतिबंध बोलो
जै०वि०भा० में भी नहीं तुमको निहारा
जुड़ा है अनुबंध किससे राज खोलो
फलसफा क्या है तुम्हारी जिंदगी का
कौन आकर अब यहाँ हमको बताए।।

प्रगति की धारा नई तुमने बहाई
स्वप्न देखे रात-दिन कितने सलोने
था गजब का हौसला जज्बा तुम्हारा
लग रहे योद्धा प्रखर सब आज बौने
राख बन जीना न तुमको रास आया
ज्योति की आराधना कर दिपदिपाए।।

बालकों के मृदुल दिल में बस रहे तुम
तरुण पलभर भी न तुमको भूल पाते
वृद्ध भक्तों के हृदय का हाल देखो
क्यों नहीं तुम ये सभी नाते निभाते
विशद स्मृतियों का खजाना पास मेरे
कौन उसको खोलकर तुमको दिखाए।।

(क्रमशः)

संबोधि

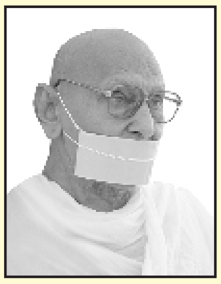

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(२७) नरको नाम नास्तीति, नैवं संज्ञां निवेशयेत्।
स्वर्गोऽपि नाम नास्तीति, नैवं संज्ञां निवेशयेत्।।

'नरक नहीं है'—इस प्रकार की अवधारणा न करे। 'स्वर्ग नहीं है'—इस प्रकार की भी अवधारणा न करे।

मनुष्य प्रत्यक्ष में संदिग्ध नहीं होता। वह संदिग्ध होता है परोक्ष में। दृश्य में जितना विश्वास है उतना अदृश्य में नहीं; जबकि सत्य दोनों हैं। प्रत्यक्ष में सत्य का आग्रह करने वाला परोक्ष की सच्चाई को झुठला देता है।

मनुष्य और तिर्यंच—ये दोनों योनियाँ प्रत्यक्ष हैं, वैसे स्वर्ग और नरक नहीं। लेकिन उनके प्रत्यक्ष न होने से वे नहीं हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। मनुष्य के ज्ञान की एक सीमा होती है। वह इस सीमा से परे का विषय है। जिस व्यक्ति का आवरण हट जाता है, उसके लिए मनुष्य जैसा ही वह प्रत्यक्ष है। इसलिए अपनी क्षमता को बढ़ाएँ न कि सत्य को झुठलाएँ। भगवान् महावीर ने इसलिए अपने शिष्यों से कहा कि—'नरक और स्वर्ग नहीं है'—ऐसा संज्ञान मत करो।

(२८) पञ्चेन्द्रियवधं कृत्वा, महारम्भपरिग्रहौ।
मांसस्य भोजनश्चापि, नरकं याति मानवः।।

जो पुरुष पंचेन्द्रिय का वध करता है, महा-आरंभ—हिंसा करता है, महापरिग्रही होता है और जो मांस-भोजन करता है, वह नरक में जाता है।

(२९) सरागसंयमो नूनं, संयमासंयमस्तथा।
अकामनिर्जरा बाल-तपः स्वर्गस्य हेतवः।।

स्वर्ग में जाने के चार कारण हैं—(१) सराग संयम—अवीतराग का संयम, (२) संयमासंयम—अपूर्ण संयम, (३) अकाम निर्जरा—जिसमें मोक्ष का उद्देश्य न हो वैसे तप से होने वाली आत्मशुद्धि और (४) बाल-तप—अज्ञानी का तप।

(३०) विनीतः सरलात्मा च, अल्पारंभपरिग्रहः।
सानुक्रोशोऽमत्सरी स, जनो याति मनुष्यताम्।।

जो विनीत और सरल होता है, अल्प-आरंभ और अल्प-परिग्रह वाला होता है, दयालु और मात्सर्य रहित होता है, वह मृत्यु के बाद मनुष्य-जन्म को प्राप्त होता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न २२ : क्या जैन दर्शन पंचाग्नि तप को मान्यता देता है?

उत्तर : परिव्राजक, संन्यासी पंचाग्नि तप को तपा करते हैं। यह तप हिंसा प्रधान है। हिंसाजन्य इस तप को अहिंसानिष्ठ जैन दर्शन मान्यता प्रदान नहीं कर सकता।

प्रश्न २३ : पंचाग्नि तप करने वाले को तीव्र कष्टानुभूति होती है, फिर उसमें निर्जरा (धर्म) क्यों नहीं होती?

उत्तर : केवल कष्ट सहना जैन साधना का लक्ष्य नहीं है। इसका लक्ष्य है वीतरागता इसके लिए की जाने वाली क्रिया में यदि कष्ट होता है, तो उसे सहना धर्म है। हिंसात्मक प्रवृत्ति से जो कष्टानुभूति होती है, उसमें धर्म व पुण्य कदापि नहीं होता।

प्रश्न २४ : अज्ञान तप किसे कहते हैं?

उत्तर : मिथ्यात्वी का तप अज्ञान तप कहलाता है। इसको बाल तप भी कहा जाता है।

प्रश्न २५ : मिथ्यात्वी व सम्यक्त्वी की तपस्या में क्या अंतर है?

उत्तर : मिथ्यात्वी व सम्यक्त्वी के तपस्या की निष्पत्ति में अंतर रहता है। मिथ्यात्वी के निर्जरा सम्यक्त्वी से कम होती है। मिथ्यात्वी अवस्था में तामली तापस ने साठ हजार वर्ष तक बेले-बेले तप किया था। कहा जाता है कि यदि इतनी तपस्या सम्यक्त्वयुक्त करे तो सात जीव कर्ममुक्त हो सकते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

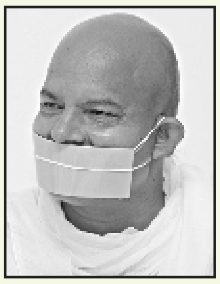

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य तुलसी

(५) द्वैक्रियवाद

गंग मुनि आचार्य धनगुप्त के शिष्य थे। वे शरद् ऋतु में अपने आचार्य को वंदना करने जा रहे थे। मार्ग में उल्लुका नदी थी। उसे पार करते समय सिर को सूर्य की गरमी और पैरों को नदी की ठंडक का अनुभव हो रहा था। मुनि ने सोचा, आगम ने कहा है—एक समय में दो क्रियाओं की अनुभूति नहीं होती। किंतु मुझे एक साथ दो क्रियाओं की अनुभूति हो रही है। वे गुरु के पास पहुँचे और अपना अनुभव सुनाया। गुरु ने कहा—'वास्तव में एक समय में एक ही क्रिया की अनुभूति होती है। मन का क्रम बहुत सूक्ष्म है, इसलिए हमें उसकी पृथक्ता का पता नहीं चलता।' गुरु की बात उन्हें नहीं जंची। वे संघ से अलग होकर 'द्वैक्रियवाद' का प्रचार करने लगे। ये पाँचवें निह्नव हुए।

(६) त्रैराशिकवाद

छठे निह्नव रोहगुप्त (षडुलूक) हुए। वे अंतरंजिका के भूतगृह चैत्य में ठहरे हुए अपने आचार्य श्रीगुप्त को वंदन करने जा रहे थे। वहाँ पोट्टशाल परिव्राजक अपनी विद्याओं के प्रदर्शन से लोगों को अचम्भे में डाल रहा था और दूसरे सभी धार्मिकों को वाद के लिए चुनौती दे रहा था। आचार्य ने रोहगुप्त को उसकी चुनौती स्वीकार करने का आदेश दिया और मयूरी, नकुली, विडाली, व्याघ्री, सिंही आदि अनेक विद्याएँ भी सिखाई।

रोहगुप्त ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया। राजसभा में चर्चा का प्रारंभ हुआ।

पोट्टशाल ने जीव और अजीव—इन दो राशियों की स्थापना की। रोहगुप्त ने जीव, अजीव और नो जीव नो अजीव—इन तीन राशियों की स्थापना कर उसे पराजित कर दिया।

रोहगुप्त ने वृश्चिकी, सर्पी, मूषिकी आदि विद्याएँ भी विफल कर दीं। उसे पराजित कर रोहगुप्त अपने गुरु के पास आए, सारा घटना-चक्र निवेदित किया। गुरु ने कहा—'राशि दो है। तूने तीन राशि की स्थापना की, यह अच्छा नहीं किया। वापस सभा में जा, इसका प्रतिवाद कर।' वे आग्रहवश गुरु की बात स्वीकार नहीं कर सके। गुरु उन्हें 'कुत्रिकापण' में ले गए। वहाँ जीव माँगा वह मिल गया, अजीव माँगा वह भी मिल गया, तीसरी राशि नहीं मिली। गुरु राजसभा में गए और रोहगुप्त की पराजय की घोषणा की। इस पर भी उनका आग्रह कम नहीं हुआ। इसलिए उन्हें संघ से अलग कर दिया गया।

(७) अबद्धिकवाद

सातवें निह्नव गोष्ठामाहिल थे। आर्यरक्षित के उत्तराधिकारी दुर्बलिका पुष्यमित्र हुए। एक दिन वे विन्ध्य नामक मुनि को कर्म-प्रवाद का बंधाधिकार पढ़ा रहे थे। उसमें कर्म के दो रूपों का वर्णन आया। कोई कर्म गीली दीवार पर मिट्टी की भाँति आत्मा के साथ चिपक जाता है—एकरूप हो जाता है और कोई कर्म सूखी दीवार पर मिट्टी की भाँति आत्मा का स्पर्श कर नीचे गिर जाता है—अलग हो जाता है।

गोष्ठामाहिल ने यह सुना। वे आचार्य से कहने लगे—'आत्मा और कर्म यदि एकरूप हो जाएँ तो फिर वे कभी भी अलग-अलग नहीं हो सकते। इसलिए यह मानना ही संगत है कि कर्म आत्मा का स्पर्श करते हैं, उससे एकीभूत नहीं होते। वास्तव में बंध होता ही नहीं। आचार्य ने दोनों दशाओं का मर्म बताया, पर उन्होंने अपना आग्रह नहीं छोड़ा। आखिर उन्हें संघ से पृथक् कर दिया गया।

इन सात निह्नवों में जमाली, रोहगुप्त और गोष्ठामाहिल—'ये तीन अंत तक अलग रहे, भगवान् के शासन में पुनः सम्मिलित नहीं हुए। शेष चार निह्नव प्रायश्चित्त लेकर पुनः शासन में आ गए।'

(क्रमशः)

✦ भौतिक विकास के बिना नगर, प्रांत और राष्ट्र परिपूर्ण विकास वाला नहीं बन सकता।

—आचार्यश्री महाश्रमण

टीपीएफ के विविध आयोजन

टीपीएफ द्वारा यूनियन बजट-२०२३-२४ की विश्लेषण कार्यशाला

साउथ कोलकाता।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट-२०२३-२४ देश के समक्ष पेश किया। इस महत्त्वपूर्ण विषय को मद्देनजर रखते हुए टीपीएफ, साउथ कोलकाता ने यूनियन बजट-२०२३-२४ की गहन विश्लेषण कार्यशाला का आयोजन आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर, कोलकाता में किया गया।

टीपीएफ के उपाध्यक्ष यशवर्धन बैद ने कार्यक्रम में सभी लोगों का स्वागत किया। टीपीएफ फ्यूचरा की सदस्या आकांक्षा सिरोहिया ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत किया। यशवर्धन बैद ने कार्यशाला के प्रमुख वक्ता का सभी से परिचय कराया।

कार्यशाला में फोरम के वरिष्ठ सदस्य सुमेरमल सुराना का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने इनकम टैक्स में सभी के लिए उपयोगी जानकारियाँ और सुझाव दिए। उन्होंने बजट से संबंधित सारे इनकम टैक्स के पहलुओं को समझाते हुए लोगों का ज्ञानवर्धन किया।

इसके पश्चात प्रवीण कुमार सुराना ने सभी के लिए जीएसटी से संबंधित उपयोगी जानकारियाँ और सुझाव दिए। टीपीएफ के ईस्ट जोन-१ अध्यक्ष धर्मचंद धाड़ेवा ने सभी को एएमकेसी के आगामी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी और इसका उपयोग लेने के लिए कहा। फिर एएमकेसी कोलकाता के कन्वेनर विक्रम चिंडालिया ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी।

कार्यक्रम में टीपीएफ के ईस्ट जोन-१ अध्यक्ष धर्मचंद धाड़ेवा, फेमिना नेशनल को कन्वेनर कंचन सिरोहिया, साउथ सभा के मंत्री कमल सेठिया एवं सहमंत्री द्वितीय यशवंत रामपुरिया, अणुव्रत समिति, कोलकाता के अध्यक्ष प्रदीप सिंधी सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में सुराणा ने सभी लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

फोरम के मंत्री प्रवीण कुमार सिरोहिया ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में ५२ लोगों ने भाग लिया और लाभान्वित हुए।

उत्कर्ष - कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला

साउथ कोलकाता।

बच्चे देश का भविष्य हैं, किंतु बच्चे ही अपने भविष्य को लेकर आशंकित रहते हैं। आगे उन्हें भविष्य में क्या करना है? कब करना है? कैसे करना है? इस विषय को मद्देनजर रखते हुए टीपीएफ, साउथ कोलकाता ने श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी विद्यालय (ब्वॉयज एचएस) के विद्यार्थियों के लिए एक कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला का आयोजन किया, जिससे बच्चे अपनी परीक्षा से पूर्व लाभान्वित हो सकें और उन्हें पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके। फोरम के सदस्य एवं टीपीएफ फ्यूचरा के को-कन्वेनर रोहित दुगड़ ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की।

टीपीएफ के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने अपने अध्यक्षीय स्वागत वक्तव्य में सभी का अभिनंदन करते हुए बच्चों व अभिभावकों को कैरियर काउंसलिंग की उपयोगिता बताते हुए फोरम की तरफ से हरसंभव मदद का भरोसा दिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति भीखमचंद पुगलिया का संक्षिप्त परिचय देकर उन्हें आमंत्रित किया। भीखमचंद ने विद्यालय के लिए किए जा रहे कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला के लिए टीपीएफ साउथ कोलकाता के प्रयास की सराहना की।

टीपीएफ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेश भूतोड़िया ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए हरसंभव मदद का भरोसा दिया। टीपीएफ ईस्ट जोन-१ के अध्यक्ष धर्मचंद धाड़ेवा ने बच्चों को ध्यान से सभी ऑपरेशन को सुनने और सटीक ऑपरेशन को चुनने के लिए जागरूक रहने के लिए कहा। स्कूल की प्रधानाध्यापिका पूनम सिंह ने टीपीएफ को इस कार्यशाला के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

कैरियर काउंसलिंग के को-कन्वेनर राजेश घोड़ावत ने बच्चों को इस कार्यशाला का लाभ लेने के लिए कहा। कार्यशाला में कैरियर डीएनए से नीता नाहटा और चेतना जैन, उपाध्यक्ष जेपी मॉर्गन सर्विसेज इंडिया प्रा० लिमिटेड का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम में टीपीएफ फेमिना विंग की नेशनल को-कन्वेनर कंचन सिरोहिया सहित अनेक पदाधिकारियों, सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के अंत में नीता नाहटा ने सभी बच्चों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। 'ऑफलाइन आहा स्लाइड क्विज प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इसमें अव्वल आने वाले छात्रों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार से पुरस्कृत भी किया गया। फोरम के मंत्री प्रवीण कुमार सिरोहिया ने सभी का आभार ज्ञापन किया। मुनि जिनेश कुमार जी द्वारा मंगल उद्‌बोधन प्राप्त हुआ।

उत्कर्ष कैरियर काउंसलिंग वर्कशॉप

औरंगाबाद।

टीपीएफ, औरंगाबाद ने कक्षा ९ से १२ के विद्यार्थियों के लिए कैरियर काउंसलिंग कार्यशाला का आयोजन साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी ने नवकार मंत्र के जाप के साथ करवाई। टीपीएफ, औरंगाबाद की अध्यक्ष सीए पूजा बागरेचा ने अपने स्वागत वक्तव्य में बाज के बदलते युग में कैरियर काउंसलिंग का महत्त्व समझाया। साथ ही टीपीएफ के उपक्रम जैसे आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना, टीपीएफ परामर्श और TPF Putura के बारे में जानकारी दी। अपने वक्तव्य में टीपीएफ के मूलमंत्र 'हमारा संघ, हमारा दायित्व' के अनुसार टीपीएफ, औरंगाबाद संघ व समाज के लिए यथासंभव प्रयास करने का आश्वासन दिया।

इसके बाद टीपीएफ वेस्ट जोन के संयुक्त सचिव अंकुर लुणिया ने बच्चों से जाना कि वह भविष्य में क्या बनना चाहते हैं अगर कोई भी बच्चा सीए, डॉक्टर, एमबीए, इंजीनियर, अन्य फील्ड में आगे बढ़ना चाहता है उसके लिए टीपीएफ हर संभव सहायता प्रदान करेगा। बच्चों के साथ अभिभावकों को भी यह सुझाव दिया गया आगे आने वाले भविष्य में किसी भी तरह की कोई भी कैरियर काउंसलिंग संबंधी जिज्ञासा हो तो आप हम लोगों से संपर्क कर सकते हैं।

अंत में साध्वीश्री जी ने बच्चों और सभी पेरेंट्स को टीपीएफ की महत्ता के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। टीपीएफ, औरंगाबाद की मंत्री सीए नेहा जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

दृष्टि का बदलाव देता है जिंदगी का आनंद

विजयवाड़ा।

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का अपनी सहवर्तिनी साध्वियों के साथ जुलूस के साथ पदार्पण हुआ। ज्ञानशाला सहित समस्त संस्थाएँ पूर्ण उत्साह के साथ संभागी बनी। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि वैदिक परंपरा में माना जाता है सृष्टि का निर्माण ब्रह्मा जी ने किया। कहते हैं, ब्रह्मा के मन में प्रश्न उठा–पूछ तो लूँ मेरा कार्य सबको कैसा लगा। सबने अपनी बात बताई, पर हर निर्माण में मानव कुछ न कुछ गलतियाँ निकालता रहा।

साध्वीश्री जी ने कहा कि नकारात्मक सोच के कारण व्यक्ति नकारात्मक पदार्थ के प्रति आकर्षित हो जाता है। वर्तमान में अपेक्षा है, ऐसी साधना हो जिससे वर्तमान का पुरुषार्थ फलित हो। अपने व्यवहार से अपना नुकसान न करें। विज्ञान का सिद्धांत है–जैसा सोचते हैं वैसा घटित हो जाता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला परिवार द्वारा भिक्षु स्तवन के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ सभा के मंत्री मनोज पुगलिया एवं तेमम मंत्री शशि सेठिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना प्रभारी नरेंद्र नाहटा ने महासभा परिवार की ओर से स्वागत किया। महिला मंडल ने स्वागत में गीत प्रस्तुत किया। तेयुप की ओर से समय नौलखा ने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेंद्र कोठारी, अणुव्रत समिति के केंद्र प्रभारी विमल बैद ने कहा कि प्रबुद्ध साध्वीश्री जी का हम सभी अधिक-से-अधिक लाभ लेने का प्रयास करें। ज्ञानशाला के बच्चे दीपेश कुंडलिया एवं विधि कुंडलिया ने संवाद प्रस्तुत किया। दुबई में प्रवासित राजेंद्र बैंगानी ने साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के प्रति अपने भाव संप्रेषित किया एवं आभार व्यक्त किया, साध्वीश्री जी से जुड़े संस्मरणों से संबंधित पत्र का वाचन चंदा चोरड़िया ने किया।

साध्वीवृंद ने सामूहिक संगान से अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि हम एक मंजिल विजयवाड़ा पहुँच चुके हैं। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी का विजयवाड़ा पदार्पण हुआ है। मंगल और विजय का शुभ संयोग है। यह प्रवास मंगलकारी बने। तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष राजेंद्र कोचर ने कार्यक्रम का संचालन किया।

पैंसठिया यंत्र महाअनुष्ठान का आयोजन

राउरकेला।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में पैंसठिया यंत्र महाअनुष्ठान का आयोजन तेयुप द्वारा हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि हमारा जीवन अनेक प्रकार के प्रभावों से प्रभावित होता है। वातावरण का, ग्रह नक्षत्र का, कर्मों का प्रभाव इन सब प्रभावों से अपने आपको सुरक्षित तभी रख सकते हैं, जब अपनी आंतरिक शक्ति मजबूत बने। अपनी सुरक्षा करने के साथ अपनी शक्ति को बढ़ाने का प्रयास सतत करना चाहिए।

अपने आध्यात्मिक विकास, अपनी सुरक्षा के लिए मंत्र एवं यंत्र का उपयोग किया जा सकता है। पैंसठिया यंत्र छंद में चौबीस तीर्थंकरों का समावेश है, ये चौबीस तीर्थंकर अनंत शक्तियों से परिपूर्ण है। पैंसठिया यंत्र छंद बहुत प्रभावशाली चमत्कारी है। तीर्थंकरों के नाम का स्मरण करने से शक्ति का विकास होता है। कर्म क्षय होते हैं। हर समस्या का निवारण यंत्र की साधना से हो जाता है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जीवन में कुछ पाना है तो परिश्रम करना होता है। आत्मा को परमात्मा बनाना है तो जप, तप, ध्यान की साधना से शरीर को माध्यम बनाकर आत्मा को तपाना है। जैन आगम में ज्ञान का भंडार भरा है। मंत्र-यंत्र की आराधना करते हुए तप का योग मिल जाए तो वह साधना शीघ्र सिद्ध होती है। जिसकी चेतना भीतर से जुड़ जाती है वह परम आनंद को प्राप्त करता है। मंत्र, तंत्र, यंत्र एवं ध्यान-तप की साधना में श्रद्धा का जुड़ाव होना जरूरी है।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

छापर।

मुनि रणजीत कुमार जी का अपने सहवर्ती मुनि कौशल कुमार जी के साथ राजलदेसर से लाडनूं की ओर विहार करते हुए छापर के भिक्षु साधना केंद्र में पधारना हुआ। जहाँ आपका तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी आदि विराजित संतों से आध्यात्मिक मिलन हुआ। आपकी अगवानी करने मुनि पृथ्वीराज जी श्रावकों के साथ काफी आगे तक पधारे।

इस दौरान अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रदीप सुराणा, मंत्री विनोद नाहटा, पन्नालाल प्रजापत आदि सेवा में थे।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

खगड़ा

तेरापंथी सभा, बरहमपुर के अंतर्गत ज्ञानशाला खगड़ा की सार-संभाल कार्यक्रम महिला मंडल अध्यक्ष पुष्पा गुलगुलिया के निवास स्थान पर वृहद कोलकाता दक्षिण बंगाल ज्ञानशाला संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, कार्यकारिणी समिति सदस्य मालचंद भंसाली एवं क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

बरहमपुर सभा के पूर्व अध्यक्ष नवरत्न गुलगुलिया, वर्तमान अध्यक्ष तथा ज्ञानशाला संयोजक सुरेंद्र गुलगुलिया, तेयुप से दीप पुगलिया, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, महिला मंडल की बहनों तथा अभिभावकों की उपस्थिति में ज्ञानार्थी बच्चों ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के जीवन पर नाटिका, पाँच महाव्रतों पर संवाद तथा अन्य प्रस्तुतियाँ दीं।

ज्ञानशाला संयोजिका प्रेमलता चोरड़िया ने बच्चों को ज्ञानशाला में आने के लिए प्रेरित किया तथा हमारा मार्गदर्शन भी किया। मंजु घोड़ावत ने कहानी के माध्यम से बच्चों को किस तरह सिखाया जाए यह बताया। मालचंद ने भी ज्ञानशाला में बच्चे आएँ एवं कैसे हम उनको सुसंस्कारी बना सकें, इस पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रशिक्षिका वर्षा छाजेड़ ने किया।

गंगाशहर

मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि विमल विहारी जी और मुनि प्रबोध कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला संचालित की गई। जिसमें १३० से अधिक ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। ज्ञानशाला की संयोजिका संजू लालाणी ने ज्ञानशाला वार्षिक परीक्षा के परिणाम घोषित किए।

भाग-१ से प्रथम रूही बांठिया, आर्यन भंसाली, द्वितीय मान्या भूगड़ी, प्रेरणा जैन, मुदित सोनी, चविका सेठिया। भाग-२ से प्रथम सृष्टि ललवानी, द्वितीय काव्य बोथरा, चिराग पुगलिया, मिहिर बैद, निधि आंचलिया, तृतीय गणेश बैद। भाग-३ से प्रथम पलक जैन, द्वितीय मैत्री डाकलिया, तृतीय सौम्या भूरा। भाग-४ से प्रथम नुपूर नाहर, द्वितीय धरणेंद्र चोरड़िया, तृतीय दीक्षा भूरा। भाग-५ से प्रथम दैविक लुणिया, द्वितीय लक्ष्य पुगलिया, तृतीय दृष्टि चोपड़ा रहे।

कार्यक्रम में ज्ञानशाला के क्षेत्रीय संयोजक एवं तेरापंथी सभा के मंत्री रतनलाल छलानी, संयोजिका संजू लालाणी, व्यवस्थापक देवेंद्र डागा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभी बच्चों ने इसमें उत्साह से भाग लिया।

उत्तर मध्य कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में मध्य उत्तर कोलकाता, ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि बच्चों को ज्ञानशाला अवश्य भेजें। बच्चों को सार्टिफिकेट, उपहार प्रदान किया गया। सुनीता बाई को ऑल इंडिया रैंक होने पर सम्मानित किया गया। सभी बच्चे, अभिभावकगण, श्रावक समाज ने पधारकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

सभा के अध्यक्ष पारसमल सेठिया, मंत्री दिलीप बैद, बृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने अपना वक्तव्य रखा। आंचलिक समिति के वरिष्ठ सदस्य मालचंद भंसाली, मंजु घोड़ावत, प्रकाश दुगड़, निधि कोचर, मुख्य प्रशिक्षिका वीणा, उषा, सुनीता, सरिता, स्थानीय सभी प्रशिक्षिकाएँ उपस्थिति में बच्चों ने भगवान महावीर के तीन सूत्रों—अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत पर मनमोहक नाटिका प्रस्तुत किया सभा का सहयोग रहा।

कोलकाता

सॉल्ट लेक सभा के अंतर्गत चलने वाली एक्टिव ऐकर, पनास एवं सॉल्ट लेक यह तीन ज्ञानशाला में वार्षिकोत्सव उत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में ज्ञानशाला की सार-संभाल हेतु आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया, आंचलिक समिति के सदस्य मालचंद भंसाली कमेटी सदस्य, मंजू घोड़ावत, पूजा पारख, बबीता तातेड़ आदि पधारे। कार्यक्रम में सॉल्ट लेक सभा के अध्यक्ष रूपचंद सेठिया, मंत्री विनोद संचेती, सरला बाई और उषा बाई उपस्थित थी। कार्यक्रम का शुभारंभ मालचंद द्वारा नमस्कार महामंत्र, प्रशिक्षिकों के मंगलाचरण व बच्चों के ज्ञानशाला गीत की प्रस्तुति द्वारा हुआ।

सभा के अध्यक्ष रूपचंद सेठिया ने स्वागत भाषण से अतिथियों का स्वागत किया। मोमेंटो एवं साहित्य के द्वारा आगंतुक अतिथियों का सम्मान किया गया। ज्ञानार्थी बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी।

मुख्य प्रशिक्षक संगीता बोथरा ने ज्ञानशाला के रजिस्टर, एक्टिविटी फाइल, कार्यक्रम की फोटो, रिपोर्ट फाइल आदि दिखाए। प्रशिक्षिका प्रज्ञा बैद, सुमिति चोरड़िया उपस्थित थी। बच्चों को ज्ञानशाला परीक्षा व जैन विद्या परीक्षा के लिए पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षित आई व सभी ज्ञानार्थियों ने भाग लिया। सभी प्रशिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों ने किया।

औरंगाबाद

तेरापंथी सभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला की मौखिक परीक्षा संपन्न हुई। उसके परिणाम और पारितोषिक वितरण समारोह साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। पुरस्कार वितरण समारोह के साथ टीपीएफ कैरियर काउंसलिंग सेमिनार हुआ। मंगलाचरण प्रशिक्षिकाएँ और ज्ञानार्थियों के द्वारा हुआ।

टीपीएफ, औरंगाबाद की अध्यक्षा पूजा बागरेचा और टीपीएफ वेस्ट जोन सहमंत्री एवं तेयुप मंत्री अंकुर लुणिया ने अपने वक्तव्य के बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साध्वी सहजयशा जी ने ज्ञानार्थियों से प्रश्नरूपी संवाद किया। साध्वीश्री जी ने बच्चों को ज्ञानशाला में नियमित आने के लिए प्रेरित किया। भाग-१ से भाग-५ और संस्कार ज्ञान के ज्ञानार्थियों को पूर्व आंचलिक संयोजिका माया मूथा, क्षेत्रीय संयोजिका मीना सेठिया, मुख्य प्रशिक्षिका प्रियंका सुराणा, तेयुप मंत्री अंकुर लुणिया एवं अभिभावकों के द्वारा पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी प्रशिक्षिकाओं का सहयोग रहा। सूत्र संचालन प्रशिक्षिका सन्मति सेठिया ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य प्रशिक्षिका प्रियंका सुराणा ने किया।

वर्धमान महोत्सव का आयोजन

बालोतरा।

वर्धमान महोत्सव पर बालोतरा न्यू तेरापंथ भवन में कुमार श्रमण जी के सान्निध्य में प्रेक्षावाहिनी का आयोजन किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षक ममता गोलेच्छा ने प्रेक्षावाहिनी की संपूर्ण जानकारी दी। लगभग ८० सदस्य हैं।

कुमार श्रमण जी ने प्रेक्षाध्यान की जानकारी बताते हुए कहा कि ध्यान का प्रारंभ समताल प्रेक्षा से करें और समताल प्रेक्षा का प्रयोग भी करवाया तथा बताया कि एक ही प्रयोग को नियमित करने से ही हमें निष्पत्ति मिलेगी।

गुरुदेव का भी हमें सान्निध्य प्राप्त हुआ। संवाहक जवेरीलाल सालेचा, सह-संवाहक विधि भंसाली, सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, मीना ओस्तवाल सहित ५० सदस्य की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन ममता गोलेच्छा ने किया।

मर्यादा महोत्सव के आयोजन

विल्लुपुरम

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में १५९वाँ मर्यादा महोत्सव तमिलनाडु के विल्लुपुरम क्षेत्र में मनाया गया। साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विल्लुपुरम के पड़ोसी क्षेत्र वलवनूर महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि हम तेरापंथ जैसा चिंतामणि, कामधेनु, कल्पतरु धर्मसंघ को पाकर अहर्निश निश्चिंतता का अनुभव करते हैं। हमारे शासन में एक गुरु का नेतृत्व, एक आचार, एक विचार की महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठा है। आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा, समर्पण, विनय, वात्सल्य से परिपूर्ण, यह संघ हमारे लिए प्राण है, चरण है, गति है, प्रतिष्ठा है। हम संघ, संघपति के प्रति समर्पित रहें तो संघ में हमारा निर्माण होता रहता है। साध्वी दर्शितप्रभा जी ने 'हमारा संघ हमारा क्यों?' विषय पर प्रस्तुति दी।

विल्लुपुरम महिला मंडल, कन्या मंडल द्वारा १५९वें मर्यादोत्सव की प्रस्तुति हुई। सेलमवासी द्वारा प्रश्नोत्तर शैली में रोचक प्रस्तुति दी गई। महासभा के कार्यकारिणी सदस्य राजेश सुराणा, सभाध्यक्ष महेंद्र धोखा, तिरुकुल्लीकुंड्रम सभाध्यक्ष बाबूलाल खटेड़, पांडिचेरी सभाध्यक्ष हेमराज कुंडलिया, सेलम सभा मंत्री प्रवीण बोहरा, कडलूर तेरापंथ सभाध्यक्ष सौभागमल सांड, तिरची से ज्योति सुराणा, तिरुकोईलूर से मोहन, वलवनूर महिला मंडल आदि कन्या मंडल से भव्या, गीता बरड़िया ने विचार व्यक्त किए। सेलम वासियों ने साध्वीश्री जी को चातुर्मास काल में हुई तपस्या, कार्यक्रम, अनुष्ठान, कार्यशाला आदि का एल्बम भेंट किया। इस एल्बम का सारा श्रेय मीडिया प्रभारी जितेंद्र घोषल, बैंगलुरु एवं सेलम महिला मंडल मंत्री सरिता चोपड़ा को जाता है।

कार्यक्रम में चेन्नई, तिरुकुलीकुंड्रम, पांडिचेरी, वंदवासी, वनवनुर, तिंदीवनम, तिरुवन्नामलाई, सेलम, कडलूर, तिरुकोईलूर आदि अनेक क्षेत्रों से श्रावक उपस्थित हुए। आभार ज्ञापन प्रेम सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सिद्धांतश्री जी ने किया।

चंडीगढ़

आचार्य भिक्षु ने अपने धर्मसंघ की एकता और पवित्रता बनाए रखने के लिए कर्तव्य-अकर्तव्य, विधि-निषेध की सीमा स्थापित की, जिसे मर्यादा नाम से जाना जाता है। इन्हीं मर्यादाओं को सुदृढ़ बनाने एवं इनको हर वर्ष दोहराने के उद्देश्य से मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया जाता है। मर्यादा महोत्सव दुनिया का अनूठा उत्सव एवं विलक्षण पर्व है। विनम्रता और सहिष्णुता मर्यादा का सुरक्षा कवच है। मन के घोड़े की लगाम को वशीकरण करने का महामंत्र है—मर्यादा। यह विचार मनीषी संत मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने १५९वें मर्यादा महोत्सव पर अणुव्रत भवन में व्यक्त किए।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व ट्राइसिटी के बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्‌बोधन मुनि अभय कुमार जी, डॉ० संपूर्णानंद ब्रह्मचारी, महासचिव अग्नि अखाड ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संजय टंडन, सहप्रभारी, भाजपा, हिमाचल प्रदेश, जस्टिस एस०सी० मोदी, जस्टिस सुदर्शना मोदी की धर्मपत्नी जस्टिस, संजीव और एडीजीपी होमगार्ड हरियाणा, सुरेंद्र मित्तल चेयरमैन पंजाब सभा, चंडीगढ़ भाजपा प्रवक्ता कैलाश जैन, डॉ० दीपक सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य, लुधियाना तेयुप के पूर्व अध्यक्ष धीरज सेठिया आदि उपस्थित थे।

शिक्षा व्यक्तित्व विकास का अनूठा उपक्रम है

कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी ने बर्बन रोड स्थित जैन विद्यालय में छात्रों के मध्य कहा कि जीवन विकास का मुख्य घटक है—सम्यक् शिक्षा। शिक्षा जीवन का उपहार है, शिक्षा जीवन का आधार है, शिक्षा जीवन का शृंगार है। शिक्षा से आंतरिक सौंदर्य का विकास होता है। संस्कारों के जागरण से ही व्यक्ति संपूर्ण रूप से अपना व्यक्तित्व बना सकता है।

शारीरिक, बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ मानसिक, भावनात्मक प्रशिक्षण जरूरी है, जिससे अनुशासन आदि तत्त्वों का विकास हो सकता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने शिक्षा जगत को नया अवदान दिया वह है जीवन विज्ञान। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से छात्रों में आशातीत बदलाव आ सकता है।

मुनिश्री ने जीवन विज्ञान के प्रयोग कराए। मुनि कुणाल कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अभातेयुप के अध्यक्ष पंकज डागा ने कहा कि बालकों को देखकर मुझे भी बचपन याद आ गया। मैं भी कुछ वर्ष तक कलकत्ता में पढ़ा हूँ। बालकों की यह अवस्था फिसलन की है इसमें सावधानी रखना और व्यक्तित्व का निर्माण करना है। विद्यालय की ओर से अध्यापक ने आभार व्यक्त किया। जुगराज बैद ने योगासन के प्रयोग कराए।

✦ व्यक्ति यह ध्यान दे कि जीवन में बुराइयाँ न पनपें और जो बुराइयाँ जीवन में प्रवेश कर चुकी हैं, उन्हें छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

हमारे व्यक्तित्व का विकास बहुत जरूरी है तभी हम जीवन में नई सोच के साथ आगे बढ़ सकते हैं। जिनसे हमें अपने विकास के लिए कई बातें सीखने को मिल सकती हैं। आज की दुनिया में लीडरशीप का बहुत महत्त्व है। कोई भी फील्ड हो, परिवार हो या व्यापार हो, समाज हो या धर्म हो। नेतृत्व के गुण को आत्मसात करने से व्यक्ति अपने क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकता है एवं नेतृत्व क्षमता को प्रशिक्षण के माध्यम से सीखकर अपने जीवन को नई दिशा दी जा सकती है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, चेन्नई द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में नया आयाम 'Make Your Mark' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

तेरापंथ सभा भवन, ट्रिप्लीकेन में आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र की मंगल ध्वनि के साथ किया गया। मंगलाचरण तेयुप मंत्री संदीप मूथा ने किया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप वरिष्ठ उपाध्यक्ष रमेश डागा ने किया। तेयुप, चेन्नई के उपाध्यक्ष विशाल सुराणा ने का स्वागत किया। चीफ ट्रेनर के रूप में पधारे अरविंद मांडोत एवं ट्रेनर दिनेश बुरड़ का सम्मान व परिचय तेयुप की टीम द्वारा किया गया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश डागा द्वारा वक्तव्य दिया गया।

अंत में व्यक्तित्व विकास के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश बुरड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप, चेन्नई सहमंत्री दिलीप गेलड़ा, कोषाध्यक्ष प्रतीक डागा, संगठन मंत्री सुधीर संचेती, कार्यसमिति एवं किशोर मंडल सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन तेयुप चेन्नई मंत्री संदीप मूथा ने किया। इस कार्यशाला को सफल बनाने में कार्यशाला के संयोजक स्नेहदीप बांठिया, आदित्य दुगड़ का विशेष श्रम रहा।

बैग पैकिंग कार्यक्रम का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल के तत्त्वावधान में तेयुप, राजाजीनगर द्वारा आयोजित बैग पेकिंग जिसके अंतर्गत ट्रेकिंग का आयोजन किया गया।

इस आयाम को संपादित करते हुए किशोर मंडल साथियों द्वारा बैंगलोर से ७१ किलोमीटर दूर दक्षिण काशी के नाम से मशहूर कोलार शहर के पास स्थित 'अंतर गंगे' पहाड़ पर चढ़ाई कर उगते सूर्य भगवान के दर्शन किए। उगता सूर्य हमको यह प्रतीत करवाता है कि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आएँगे जिसमें हमको ढलना भी सीखना है और उगते सूर्य की भाँति चढ़ना भी सीखना है।

तेयुप पदाधिकारियों ने किशोर मंडल की इस चढ़ाई में साथ देते हुए उनका उत्साह बढ़ाया। आयाम को १४ किशोरों द्वारा एक-दूसरे का साथ देते हुए संपादित किया।

तेयुप से सहमंत्री-प्रथम सुनील मेहता, सहमंत्री-द्वितीय रनित कोठारी, कोषाध्यक्ष भावेश मूथा, किशोर मंडल संयोजक कमल चोरड़िया, सह-संयोजक रिदम हिंगड़ एवं अन्य किशोरों की अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। तेरापंथ किशोर मंडल प्रभारी सचिन हिंगड़ का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर श्रीरामपुरम एवं राजस्थान पत्रिका, बैंगलोर के संयुक्त तत्त्वावधान में राजस्थान पत्रिका बैंगलोर संस्करण के २८वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित पत्रिका फेस्ट की तरह श्रीरामपुरम एटीडीसी में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में मधुमेह, रक्तचाप, दंत रोगों की जाँच व महिलाओं से संबंधित रोगों के बारे में महिला विशेषज्ञ द्वारा चिकित्सा एवं परमार्श दिया गया।

शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से सामूहिक उच्चारण से हुई। शिविर में कुल ४२ लोग लाभान्वित हुए, जिसमें २२ सदस्य मधुमेह से ग्रस्त पाए गए। सभी को डॉक्टर की सलाह हेतु कहा गया। महिला विशेषज्ञ डॉ० पदमाप्रिया ने १५ महिलाओं का परामर्श करते हुए उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। दंत चिकित्सक डॉ० अंजना ने ३२ सदस्यों के दाँतों की जाँच की व उचित सलाह दी।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे राजस्थान पत्रिका मेट्रो हेड अभिषेक सिंघल, बैंगलोर संपादकीय प्रभारी जिवेंद्र झा, चीफ रिपोर्टर राजीव मिश्रा एवं पत्रिका परिवार से योगेश एवं निकिल की उपस्थिति रही। तेयुप, राजाजीनगर संस्थापक अध्यक्ष एवं एटीडीसी प्रभारी सुनील बाफना ने पत्रिका परिवार को एटीडीसी की संपूर्ण गतिविधियों से अवगत कराया। तेयुप से अनिल भंडारी, अरविंद दुगड़, चेतन टेबा, अजय भंडारी एवं राजेश देरासरिया, स्टाफ दिव्या, दीपाश्री, पवन के सहयोग से शिविर सुव्यवस्थित आयोजित हुआ।

रक्तदान शिविर का आयोजन

जयपुर।

तेयुप, जयपुर व उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर मंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन बिमला दुगड़ (कांतिकुमार दुगड़ मेमोरियल ट्रस्ट) के प्रायोजकत्व में जयपुर रेलवे स्टेशन पर किया गया। उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर के स्टेशन डायरेक्टर गुलाबचंद गुप्ता का स्वागत तेरापंथी सभा अध्यक्ष हिम्मत डोसी ने पचरंगा ओढ़ाकर किया।

तेयुप, जयपुर अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा के नेतृत्व में पदाधिकारियों व कार्यसमिति सदस्यों ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। संतोकबा दुर्बल जी ब्लड बैंक के सहयोग से शिविर का आयोजन हुआ।

परिषद के मंत्री अविनाश छाजेड़ ने बताया कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर जंक्शन की ओर से तेयुप, जयपुर को समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उपाध्यक्ष विनय भंसाली, मंत्री अविनाश छाजेड़, संगठन मंत्री मोहित गधैया, कार्यसमिति सदस्य ऋषभ जैन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक दीपक भंसाली, वरुण बरड़िया का श्रम उल्लेखनीय रहा।

भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा महामना भिक्षु के सुदी तेरस के उपलक्ष्य में भजन संध्या का आयोजन प्रकाश चंद अमित चोरड़िया के निवास स्थान पर किया गया। अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने महामना आचार्यश्री भिक्षु को याद करते हुए उपस्थित सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

साउथ हावड़ा की युवा शक्ति ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी अभिव्यक्ति सुमधुर भजनों एवं गीतिकाओं के माध्यम से दी।

उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद, मंत्री गगनदीप बैद, सहमंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री एवं भिक्षु धम्म जागरण के पर्यवेक्षक राहुल दुगड़, संगठन मंत्री रोहित बैद, भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक हर्ष बांठिया सहित अनेक जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन भिक्षु धम्म जागरण के संयोजक जितेंद्र बैद ने किया।

भिक्षु धम्म जागरण के वार्षिक प्रायोजक उषा देवी कोठारी एवं समस्त कोठारी परिवार का आभार।

नि:शुल्क आई एंड ईयर चेकअप कैंप का आयोजन

बैंगलुरु।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, राजाजीनगर में नि:शुल्क ईयर एंड आई चैकअप कैंप का आयोजन आनवी हियरिंग एंड लेंजकेयर के संयुक्त सहयोग से हुआ।

कैंप का शुभारंभ संयोजक रोहित कोठारी एवं पर्यवेक्षक विक्रम सेठिया द्वारा मंगलाचरण के साथ किया गया। सह-संयोजक विवेक मरोठी द्वारा कैंप के बारे में जानकारी दी गई। कैंप में नेत्र चिकित्सा से ६५ लोग लाभान्वित हुए एवं कर्ण चिकित्सा से ४५ लोग लाभान्वित हुए।

तेयुप, बैंगलुरु के अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, मंत्री विकास बाबेल, प्रभारी सुरेश संचेती, सह-प्रभारी प्रसन्न धोका ने कैंप स्थल पर पधारकर सभी साथियों एवं स्टाफ का मनोबल बढ़ाया एवं सेवा प्रदान कर रहे डॉक्टरों का पुस्तक से अभिवादन किया।

विनय बैद एवं रजत बैद ने कैंप में अपनी सेवाएँ प्रदान की। प्रभारी सुरेश संचेती ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

अभातेयुप के आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के राष्ट्रीय टीम से निर्मल बैंगानी, आलोक छाजेड़ एवं ललित मेहर ने अपने विचार व्यक्त किए।

रक्तदान शिविर का आयोजन

पूर्वांचल।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा उत्तर कोलकाता महिला मोर्चा भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से आयोजित रक्तदान शिविर के०बी० पाल मोर पे पर किया। जिसमें कुल ५० यूनिट रक्त का दान वहाँ प्राप्त हुआ। तेयुप, पूर्वांचल परिषद उन सभी रक्तदाताओं के जज्बे को नमन करती हैं।

शिविर में आज अपनी सेवाएँ दी परिषद के अध्यक्ष राजीव खटेड़, उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, एमबीडीडी के सह-संयोजक विकास गंग, सिद्धार्थ दुधेड़िया ने। इस शिविर में विशेष उपस्थिति रही। बीजेपी के राज्यमंत्री सुकांत मजूमदार एवं विजय ओझा की। परिषद द्वारा सभी के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

जीवन में रखें वाणी का संयम और विवेक : आचार्यश्री महाश्रमण

नौसर, ३१ जनवरी, २०२३

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर नौसर पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि शास्त्रकार ने शिक्षा प्रदान की हैं–बिना पूछे कुछ भी मत बोलो। वाणी संयम का संदेश इसमें निहित है। आदमी को अपनी अनपेक्षित सलाह देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। वाणी संयम और विवेक महत्त्वपूर्ण है।

हमारे जीवन व्यवहार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है–बोलना। वाणी के द्वारा अपनी बात को प्रस्तुत करना। कितना आवश्यक बोलना है, उसका विवेक-संयम रखें तो यह धर्म और व्यवहार की दृष्टि से बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। अगर बात को संक्षेप में कहा जा सकता है तो उसे लंबा न करें। शांति और प्रेम से काम हो सकता है तो कठोरता एवं गुस्सा न दिखाएँ। सब जगह बोलना भी उपयुक्त हो सकता है, तो न बोलना भी उपयुक्त हो सकता है। आचार्यश्री ने यह एक प्रसंग के माध्यम से समझाया।

मेरे लिए प्रवचन में बोलना ठीक है, तो आपके लिए मौन रखना ठीक है। कहीं खाना ठीक है, तो कहीं न खाना भी ठीक है। किसके लिए तपस्या करनी ठीक है, किसके लिए उपयुक्त नहीं है, यह विवेक रखना जरूरी है। कहाँ बोलना, कब बोलना, कौन-सी बात बोलना, कितना और कैसे बोलना; ये बोलने के अनेक विभाग हैं। इन पर हम मनन करके अपने जीवन में वाणी का प्रयोग करते हैं, तो वो हमारे जीवन में बोलना उपयोगी, अच्छा और महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

भाषा के बारे में तो दसवेंआलियं आगम में पूरा अध्ययन है। साधु के लिए क्या बोलना, क्या नहीं बोलना। गृहस्थों के लिए भी प्रशिक्षण का विषय बन सकता है, कि बोलें कैसे? किसके साथ कैसे बोलें, भाषण दें तो कैसे बोलें। अलग-अलग प्रयोग का स्थल हो सकता है। मौन अच्छा है, अनावश्यक न बोलें। जहाँ कलह होने की आशंका रहती है, तो वहाँ बिलकुल न बोलें। नहीं बताने की बात भी न बोलें।

साधु कानों से बहुत कुछ सुनता है, आँखों से बहुत कुछ देखता है किंतु सारा सुना हुआ और सारा देखा हुआ साधु को बताना नहीं चाहिए। गहराई से बातें अपने भीतर ही रखें। जहाँ वाणी का असंयम हो जाता है, वहाँ कलह हो सकती है। हम जीवन में वाणी का संयम और विवेक रखने का प्रयास करें तो धर्म

की दृष्टि से कर्म बंध से बच सकते हैं। धर्म का लाभ मिल सकता है। व्यवहारकुशल व्यक्ति के रूप में अपने आपको प्रस्तुत कर सकते हैं।

पूज्यप्रवर के स्वागत में मीठालाल भंसाली, विनोद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। महिला मंडल द्वारा भाव व्यक्त किए। स्वागत के क्रम में नौसर गाँव की महिला मंडल ने गुरुदेव के समक्ष अपनी गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में कल्याण के लिए इंद्रियों पर संयम आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण

डंडाली, १ फरवरी, २०२३

मानवता के मसीहा आचार्यश्री महाश्रमण जी नोसर से १८ किलोमीटर का विहार कर डंडाली ग्राम के राजकीय विद्यालय में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि हमारे शरीर में पाँच इंद्रियाँ हैं। पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं और पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी होती हैं। हाथ-पाँव आदि पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इनसे कार्य किया जाता है।

श्रोत-चक्षु आदि से ज्ञान होता है। ये पाँच इंद्रियाँ विषयों को ग्रहण करती हैं। प्रत्येक इंद्रिय का एक विषय होता है। श्रोतेन्द्रिय का विषय है, शब्द-उसका कार्य है सुनना। वैसे ही सबके अपने-अपने विषय हैं, कार्य हैं। हमारे पास पाँचों इंद्रियाँ हैं, हम दुनिया के बड़े प्राणी हैं। बड़ों में भी तारतम्य हो सकता है।

इन पाँच इंद्रियों से हमारा लाभ भी हो सकता है और नुकसान भी हो सकता है। असंयमित इंद्रियाँ दुष्ट घोड़े के समान हैं। उत्पथ में ले जाने वाली होती हैं। ये इंद्रियाँ काले नाग के समान कर्तव्य-अकर्तव्य, विवेकरूपी जीवन को समाप्त कर देती हैं। ये कुठार के समान पुण्यरूपी वृक्ष खंड को उखाड़ देती हैं। इन इंद्रियों को जीत लो, संयम कर लो तो ये इंद्रियाँ हमारे लिए लाभदायी-कल्याणकारिणी सिद्ध हो सकती हैं।

आचार्यश्री ने एक प्रसंग से समझाया कि इशारों-इशारों में ज्ञान दिया जा सकता है। इंद्रियों को वश में करो तो कल्याण होगा। संयम न रखने से जीवन खराब हो सकता है। इस इंद्रियगण को जीतें तो जीवन शुभमय हो जाएगा। हम इंद्रियों को वश में रखने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आज यहाँ इस गाँव में आए हैं। पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति–इन तीनों संकल्पों को समझाकर प्रतिज्ञाएँ स्वीकार करवाई।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल के प्रधानाचार्य पुरखाराम, डंडाली सरपंच गुलाबसिंह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने दिया।

आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल सेंटर का उद्घाटन समारोह

सूरत।

मानव सेवा को समर्पित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर का उद्घाटन आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त संस्कार विधि जैन संस्कार विधि से अभातेयुप के निर्देशन एवं तेयुप, सूरत द्वारा एटीडीसी प्रथम का उद्घाटन संस्कारक मनीष कुमार मालू विनीत सामसुखा, नरेंद्र भंसाली, बजरंग बैद ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि का विवेचन करते हुए संपन्न करवाया।

इस कार्यक्रम में अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, महामंत्री पवन मांडोत द्वारा रिबन खोलकर उद्घाटन किया। एटीडीसी स्थान सहयोगी विजय छाजेड़, एटीडीसी राष्ट्रीय प्रभारी अर्पित नाहर, चौका सत्कार राष्ट्रीय प्रभारी प्रकाश छाजेड़, सरगम राष्ट्रीय प्रभारी, उधना अध्यक्ष व संस्कारक सुनील चिंडालिया, व्यक्तित्व विकास कार्यशाला सहप्रभारी अमित गन्ना एवं अभातेयुप सदस्य व स्थानीय तेयुप अध्यक्ष अमित सेठिया, मंत्री अभिनंदन गादिया, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों आदि की उपस्थिति रही।

✦ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं–मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।
—आचार्यश्री महाश्रमण

मनुष्य जन्म दुर्लभ, करें सदुपयोग : आचार्यश्री महाश्रमण

अरणियाली, ३ फरवरी, २०२३

साधना के श्लाका पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः सिणधरी से १५ किलोमीटर का विहार कर अरणियाली के राजकीय बालिका उच्च विद्यालय में पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है कि यह मानुषत्व या मनुष्य-जन्म दुर्लभ है, प्राणियों को लंबे काल तक भी नहीं मिलता है। कर्म का विपाक गाढ़ होता है, इसलिए यह मनुष्य जन्म नहीं मिलता है। इसलिए समय-मात्र भी प्रमाद मत करो।

वर्तमान में यह दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त है। इस दुर्लभ उपलब्धता का हमें बढ़िया उपयोग करना चाहिए। एक जन्म के बाद दोबारा कैसे मिलेगा, यह विचारणीय है। मिल भी सकता है, नहीं भी मिले। प्राप्त अवसर को खो देना एक भूल हो सकती है। इस मानव जन्म का अच्छा उपयोग करने के लिए गृहस्थ जीवन में रहते हुए आत्मस्थ रहे। सभी साधु तो नहीं बन सकते हैं, पर मध्यस्थ और तटस्थ रह सकते हैं।

गृहस्थ जीवन में धर्म की चेतना बनाए रखें तो वह भी कल्याण का उपाय बन सकता है। मनुष्य जन्म एक प्रकार का वृक्ष है। इसमें फल लगें तो उसकी उपयोगिता अच्छी हो सकती है। अच्छे, स्वादिष्ट और शरीर को पोषण देने वाले फल हों। किम्पाक-फल की तरह नुकसान करने वाले फल न हों।

आचार्य सोमप्रभ जी सूरी ने बताया कि मनुष्य रूपी वृक्ष के फल रूप में जिनेंद्र पूजा हो। वीतराग प्रभु का नाम स्मरण करें। दूसरा फल है–सद्गुरु की पर्युपासना करो। प्राणियों के प्रति दया रखो। शुभ पात्र-सुपात्र में साधु जो त्यागी है, उनको दान दो। गुणों के प्रति अनुराग हो, गुण पूजा के स्थान हैं। आगम आर्षवाणी को सुनो। ये छः फल बताए हैं, इन्हें लगाने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्य रूपी वृक्ष में ये छः फल फलित हों।

अच्छी और सच्ची बात, चीज और शिक्षा जहाँ कहीं से मिले उसे ग्रहण करना चाहिए। ये मानव जीवन मिला है, यह ऐसे ही व्यर्थ न चला जाए। कुछ विशेष करें। स्थायी कोई नहीं है, सब राही हैं और राही को आगे जाना है। जीवन ऐसा जीएँ कि आगे भी अच्छा रह सके। वर्तमान में जो सुख-सुविधा मिल रही है, यह तो पूर्व की पुण्याई है। आगे के लिए भी कुछ तैयार करें। आत्मा मोक्ष को प्राप्त करे, इस दृष्टि से हम ध्यान दें।

संत लोग धर्म की बात बताते हैं, यात्रा प्रवचन करते हैं। त्यागी साधु की बात का सम्मान हो सकता है। गृहस्थ में रहकर भी साधु जैसा जीवन हो तो कल्याण हो सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय के प्रिंसिपल माधाराम ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कर्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जहाँ आपदा होती है, वहाँ कोई एक-दूसरे को सताता नहीं है।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**